मई दिवस
की
क्रांतिकारी परंपरा

★ बी टी रणदिवे

सीटू प्रकाशन

मई दिवस को हमारे देश में अक्सर ऐसे अवसर के रूप में लिया जाता है, जब मजदूर वर्ग की अनेक फौरी तथा आंशिक मांगें उठायी जाती हैं. लेकिन, मई दिवस की क्रांतिकारी परंपरा हमेशा से आंशिक मांगों को, मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता की घोषणा और पूंजीवादी व्यवस्था को खत्म करने तथा मजदूर वर्ग के पक्ष में सत्ता पर कब्जा करने में दृढ़ विश्वास व निश्चय के साथ जोड़ने की रही है.

आंशिक मांगों के लिए संघर्ष को इस तरह से सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद तथा पूंजीपति वर्ग को राजनीतिक सत्ता से हटाने के लक्ष्य के साथ जोड़ने, से मजदूर वर्ग का फौरी राजनीतिक संघर्ष सामाजिक मुक्ति के उसके अंतिम लक्ष्य से, समाजवाद के उसके लक्ष्य से जुड़ जाता है. मजदूर वर्ग के बीच का वह रुझान, जो खुद को फौरी संघर्ष तक ही सीमित रखता है, जो मई दिवस को आंशिक मांगों की घोषणा तथा उन्हें उठाये जाने के अवसर के रूप में ही देखता है, मजदूर वर्ग के संघर्ष को उसके क्रांतिकारी लक्ष्यों से और पूंजीवादी शासन को खत्म करने तथा समाजवाद व मजदूर वर्ग की सत्ता स्थापित करने के संघर्ष से, भटका देता है.

इसके विपरीत, पहला मई दिवस मनाये जाने के बाद के इन सौ सालों में हम जो सामाजिक रूपांतरण देखते हैं—जिसमें एक तिहाई दुनिया में समाजवाद कायम हो चुका है—वह मई दिवस की क्रांतिकारी परंपराओं की प्रत्यक्ष उपलब्धि है.

इन सौ सालों में एक तिहाई दुनिया समाजवादी हुई है; पुरानी साम्राज्यवादी व्यवस्था का खात्मा हुआ है; भारत जैसे पहले के गुलाम देश आजाद हुए हैं; बोल्शेविक पार्टी तथा लेनिन के नेतृत्व में दुनिया में पहली समाजवादी क्रांति संपन्न हुई है; सोवियत संघ की लाल सेना तथा वहां के मजदूर वर्ग और जनता ने फासी ताकतों का संपूर्ण विनाश किया है; महान चीनी क्रांति सफल हुई है तथा यूरोप के अनेक देशों में, क्यूबा में, कोरिया में, समाजवादी क्रांति की शानदार जीतें हुई हैं और वियतनाम के मजदूर वर्ग तथा जनता की अकल्पनीय तथा अतुलनीय जीत हुई है.

दो लाइनें क्रांतिकारी और सुधारवादी

ये जीतें विश्व मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी लाइन का, जिसका मूर्त रूप मार्क्सवाद-लेनिनवाद है, प्रत्यक्ष परिणाम हैं. पहले मई दिवस का पालन, उसमें उठायी गयी आर्थिक मांगें तथा उसमें प्रस्तुत की गयी राजनीतिक मांगे पूरी तरह से उन शिक्षाओं के अनुरूप थीं, जो मार्क्स के दिशा-निर्देशन में पहले इंटरनेशनल ने मजदूर वर्ग को दी थीं. यह आकस्मिक ही नहीं है कि वही पार्टियां, जो पहले मई दिवस के सिलसिले में घोषित इस प्रारंभिक विचारधारा के प्रति वफादार रहीं, सफल समाजवादी क्रांतियों का नेतृत्व कर सकीं —ये पार्टियां थीं, मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियां.

यह भी कोई संयोग नहीं है कि जो पार्टियां शुरू के मई दिवस आयोजनों की क्रांतिकारी समझ से भटक गयीं, कभी कोई समाजवादी क्रांति या किसी भी पूंजीवादी देश में समाजवाद

की ओर संक्रमण लाने में सफल नहीं हुईं. ज्यादातर वे पूंजीवादी ढांचे के अंदर एक विपक्षी पार्टी के रूप में ही काम करती रहीं और जब सरकार चलाने के लिए चुन भी ली गयीं, तब भी शोषणमूलक व्यवस्था को रत्ती भर भी नहीं बदल सकीं. इन पार्टियों का, यूरोप की सुधारवादी सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों का इतिहास तथा लेबर पार्टियों का इतिहास बताता है कि इन पार्टियों ने क्रांति की ओर से ही मुंह नहीं मोड़ा बल्कि मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता की ओर से भी मुंड मोड़ लिया. इस सुधारवादी रुझान ने हर महत्वपूर्ण मौके पर अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के साथ विश्वासघात किया है और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के झंडे से गद्दारी की है.

पहले साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान तथा फिर फासीविरोधी युद्ध के दौरान, ब्रिटेन की लेबर पार्टी तथा यूरोप की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों ने सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के झंडे के साथ गद्दारी की. ये पार्टियां अपनी-अपनी सरकारों के पीछे चलती रहीं और हिटलर के खिलाफ फासीविरोधी युद्ध में तभी शामिल हुईं, जब उनकी सरकारें युद्ध में शामिल होने के लिए तैयार हो गयीं.

मई दिवस की शताब्दी एक बार फिर हमारा आह्वान कर रही है कि आंदोलन के जुझारू रास्ते पर दृढ़तापूर्वक बढ़ें और आज देश के सामने जो खतरनाक स्थिति मौजूद है उससे, उसे उबारें.

१८८६ से पहले का घटनाविकास

सौ साल पहले का जमाना वह जमाना था, जब नृशंस पूंजीवादी व्यवस्था मजदूर वर्ग के कोई अधिकार स्वीकार नहीं करती थी. फिर भी, काम के घंटों को आठ घंटे के श्रम दिन तक सीमित करने का संघर्ष पूंजीवाद के गढ़ों, यूरोप तथा अमरीका, दोनों में ही विकसित होने लगा था.

१८६६ के अगस्त के महीने में अमरीका में बाल्टीमोर में हुई मजदूरों की एक कन्वेंशन ने ८ घंटे के श्रम दिन की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया. इस कन्वेंशन के दो हफ्ते के अंदर-अंदर मार्क्स द्वारा स्थापित पहले इंटरनेशनल की जेनेवा कांग्रेस ने निम्नलिखित शब्दों में यही मांग उठायी:

''श्रम दिन की कानूनी हद तय किया जाना एक प्राथमिक शर्त है, जिसके बिना मजदूर वर्ग की स्थिति में सुधार तथा उसकी मुक्ति की दूसरी सारी कोशिशें व्यर्थ साबित होंगी—कांग्रेस प्रस्ताव करती है कि ८ घंटा श्रम दिन की कानूनी सीमा हो.''

मजदूर वर्ग के दो दस्ते, साथ-साथ एक ही मांग उठा रहे थे और साझा कार्रवाई तथा एकजुटता के एक मंच की ओर बढ़ रहे थे. जेनेवा कांग्रेस के प्रस्ताव में स्पष्ट शब्दों में एलान किया गया था; ''चूंकि यह (श्रम दिन की) सीमा उत्तर अमरीकी संयुक्त राज्य के मजदूरों की आम मांग का प्रतिनिधित्व करती है, यह कांग्रेस इस मांग को सारी दुनिया के मजदूरों की आम

मांग में तब्दील करती है." इस प्रकार, अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई तथा एकजुटता के मंच की शुरूआत हुई.

लेकिन, यह तो शुरूआत भर थी. १८६६ तथा ८६ के बीच, जिस दौरान मई दिवस ने अपनी क्रांतिकारी परंपराएं कायम कीं, मजदूर वर्ग के आंदोलन को नरसंहारों तथा फांसियों का सामना करते हुए अनेक अग्निपरीक्षाओं से गुजरना पड़ा. मार्क्स तथा एंगेल्स और उनके द्वारा स्थापित इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ वर्किंग मैन (पहले इंटरनेशनल) के रूप में मजदूर वर्ग के विश्वसनीय पथ-निर्देशक मौजूद थे. इंटरनेशनल की गतिविधियां अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचीं, पेरिस के मजदूरो के विद्रोह और १८७१ में मजदूर वर्ग के पहले राज्य, पेरिस कम्यून की स्थापना में. कम्यूनार्डों के नृशंस जनसंहार के बाद यूरोप के देशों में भयंकर प्रतिक्रिया का दौर-दौरा हो गया. पहले इंटरनेशनल का मुख्यालय लंदन से हटाकर न्यूयार्क लाना पड़ा. १८७६ में इंटरनेशनल को भंग कर दिया गया. इस प्रकार, मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता तथा एकजुटता को मजबूत बनानेवाले पहले संगठन का अंत हो गया.

फिर भी, मजदूर वर्ग का संघर्ष जारी रहा. इस संघर्ष को पूरी तरह दबाया नहीं जा सका था. १८८४ के अक्टूबर में अमरीका तथा कनाडा की **फेडरेशन आफ आर्गनाइज्ड ट्रेड्स एंड लेबर यूनियंस** की चौथी कांग्रेस में यह फैसला लिया गया कि मई १८८६ से ८ घंटे का काम, कानूनी श्रम दिन होगा.

इस प्रस्ताव में १ मई को हड़ताल करने का कार्यक्रम रखा गया था और इस प्रकार मई दिवस की जुझारू हड़ताल की परंपरा की शुरूआत हुई. १८८६ की मई तक कई हजार मजदूर और अनेक संगठन ८ घंटे के श्रम दिन के लिए हड़ताल करने के लिए तैयार हो चुके थे.

शिकागो की खून की होली

शिकागो, में सबसे जुझारू हड़ताल हुई, जहां हजारों मजदूरों ने सीधी कार्रवाई में हिस्सा लिया था. मालिकों और पूंजीवादी अमरीकी सरकार न जवाबी हमला करने का फैसला कर लिया. ३ मई को मजदूरों के खिलाफ की गयी पुलिस कार्रवाई के विरोध में ४ मई को एक प्रदर्शन आयोजित किया गया था. इस प्रदर्शन के दौरान उकसावेबाजों तथा भाड़े के दलालों ने एक बम कांड कर दिया, ताकि मजदूरों के नेताओं को बदनाम किया जा सके तथा फंसाया जा सके. ३ तथा ४ मई की घटनाएं, जिनकी परिणति हे मार्केट कांड के नाम से प्रसिद्ध घटना में हुई थी, सीधे-सीधे पहली मई की हड़ताल का ही परिणाम थीं. ४ मई का हे मार्केट चौक का प्रदर्शन, ३ मई को हड़ताली मजदूरों की एक मीटिंग पर पुलिस के पाशविक हमले के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए बुलाया गया था. पुलिस के ३ मई के हमले सें ६ मजदूर मारे गये थे और अनेक घायल हुए थे. ४ मई की विरोध सभा शांतिपूर्ण थी, लेकिन पुलिस ने बिना किसी

उकसावे के हमला बोल दिया. भीड़ में एक बम फेंका गया, जिससे एक सार्जेंट की मौत हो गयी. इसके बाद हुई मुठभेड़ में कई पुलिसवालों और चार मजदूरों की जानें गयीं. मजदूरों के जुझारू नेताओं अल्बर्ट आर पार्संस, आगस्ट स्पाइस, अडोल्फ फिशर तथा जार्ज एंगेल को फंसाया गया तथा फांसी पर चढ़ा दिया गया और शिकागो के दूसरे अनेक जुझारू मजदूरों को लंबी-लंबी सजाएं देकर जेलों में डाल दिया गया.

पूंजीवादी न्याय ने मजदूर वर्ग के चार नेताओं की जानें ले लीं, क्योंकि वे मजदूरों के शोषण को सीमित करने की कोशिश कर रहे थे. इस प्रकार, मई दिवस की एक और जुझारू परंपरा, क्रांतिकारी बलिदानों की परंपरा शुरु हुई.

मुकद्दमे के दौरान अपना बचाव पेश करते हुए अभियुक्तों ने साहस और गरिमा का परिचय दिया. उन्होंने अपना बचाव ही नहीं किया बल्कि अधिकारियों को कठघरे में खड़ा कर दिया. जो लोग गिरफ्तारी से बच भी गये थे, वे भी अदालत के सामने हाजिर हो गये और अपने साथियों के साथ जा खड़े हुए. ११ नवंबर १८८७ को अल्बर्ट पार्संस, आगस्ट स्पाइस, जार्ज एंगेल तथा अडोल्फ फिशर को फांसी पर चढ़ा दिया गया. फांसी के तख्ते पर जाते हुए स्पाइस के अंतिम शब्द थे; ''एक जमाना आयेगा जब हमारी खामोशी हमारे शब्दों से ज्यादा मुखर होगी.''

जिन तीन नेताओं को उम्रकैद की सजा दी गयी थी, वे १८९३ में रिहा कर दिये गये. इलिनोइस के नये गवर्नर को मंजूर करना पड़ा कि इन लोगों का जुर्म साबित नहीं हुआ था और फांसी चढ़ाये गये नेताओं की ही तरह वे भी एक पूर्वाग्रही जूरी के शिकार हुए थे. मुख्य गवाह को घूस दी गयी थी. इस तरह, अमरीकी पूंजीवादी न्याय सारी दुनिया के सामने नंगा हो गया.

बहरहाल, अमरीकी मजदूरों की कुर्बानियां बेकार नहीं गयीं. यूरोप में उभरते मजदूर वर्ग के आंदोलन ने उनके साथ हाथ मिलाने का फैसला किया. सोशलिस्ट इंटरनेशनल की पहली कांग्रेस, १८८९ की पहली कांग्रेस, ने मई दिवस के पालन को अंतर्राष्ट्रीय बना देने का फैसला लिया.

सोशलिस्ट इंटरनेशनल

सोशलिस्ट इंटरनेशनल की पहली कांग्रेस कोई साधारण घटना नहीं थी. पहली इंटरनेशनल के भंग किये जाने के बाद से मजदूर वर्ग के आंदोलन का कोई केंद्र नहीं था. फिर भी, मार्क्स तथा एंगेल्स के विचार मजदूर वर्ग के आंदोलन का पथ-निर्देश करते रहे थे और उसकी राजनीतिक चेतना तथा संगठन में नया उभार आ रहा था.

आंदोलन को दिशा देने के लिए एंगेल्स अभी मौजूद थे. यह वह जमाना था, जब एक सही मार्क्सवादी कार्यक्रम के आधार पर मजदूर वर्ग की सोशलिस्ट पार्टियां स्थापित की जा रही थीं. पेरिस में इन पार्टियों की बैठक हुई, जहां नये सोशलिस्ट इंटरनेशनल की, जिसे आगे चलकर

दूसरे इंटरनेशनल के नाम से जाना गया, पहली कांग्रेस हुई. कांग्रेस के पहले सत्र में फ्रेडरिख एंगेल्स ने हिस्सा लिया, जो मजदूर वर्ग की नयी अंतर्राष्ट्रीय यूनियन का सही राजनीतिक तथा सांगठनिक रूप देने के लिए इस सारे समय में इन पार्टियों को दिशा देते रहे थे.

पहली कांग्रेस में शामिल पार्टियां तथा उनके नेतागण बहुत हद तक मार्क्सवादी शिक्षाओं से प्रभावित थे और मई दिवस को अंतर्राष्ट्रीय रूप देने का फैसला करते हुए उन्होंने तत्कालीन स्थिति पर मार्क्सवादी समझ को लागू किया था. इसलिए, वे फौरी आर्थिक मांगों का ऐलान करने से ही संतुष्ट नहीं हो सकते थे, बल्कि उन्होंने आंशिक संघर्ष को, युद्ध के खिलाफ संघर्ष और पूंजीवाद को खत्म करने की लड़ाई से जोड़ दिया.

आंशिक मांगों का कार्यक्रम

अपने पूर्ववर्ती, पहले इंटरनेशनल की ही तरह, पेरिस कार्यक्रम ने फौरी मांगों के एक ऐसे चौतरफा कार्यक्रम का आह्वान किया था, जो तत्कालीन परिस्थितियों में तीव्र वर्ग संघर्ष और मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी चेतना में बढ़ोतरी की ओर ही ले जा सकता था. इस कार्यक्रम में, एक कानून के जरिये ८ घंटे का श्रम दिन तय करने; बाल मजदूरी पर पाबंदी लगाने; अवयस्कों तथा महिलाओं की मजदूरी पर पाबंदियां लगाने; रात के काम तथा खतरनाक प्रकृति के कामों के लिए विशेष कायदे-कानून बनाने; सप्ताह में एक दिन की अनिवार्य छुट्टी; माल के रूप में या फैक्टरी द्वारा संचालित दूकानों के जरिये काम की मजदूरी दिये जाने पर रोक लगाने; फैक्टरी इंस्पेक्टरों का सरकारी ढांचा स्थापित करने जैसी मांगें मुख्य थीं. इसके अलावा, राष्ट्रीयता के आधार पर कोई भेद किये बिना स्त्रियों तथा पुरूषों को समान काम के लिए समान मजदूरी देने और ''यूनियनों तथा संगठनों के लिए निर्बाध तथा पूर्ण स्वतंत्रता'' की मांगें शामिल थीं.

ऊपर उद्धृत मांगों से साफ हो जाता है कि उस जमाने में मजदूर किन बुरे हालात में जी रहे थे और पूंजीपति वर्ग कितने बेरोकटोक ढंग से शोषण कर रहा था. इन हालात में कानून के जरिये नियंत्रण तथा श्रम दिन की इन मांगों के लिए एक अनवरत अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन, अनिवार्य रूप से क्रांतिकारी परिणामों की ओर ले जाता था.

पहले इंटरनेशनल की जेनेवा तथा ब्रुसेल्स कांग्रेसों ने भी आंशिक मांगो का एक ऐसा ही कार्यक्रम प्रस्तुत किया था. अब पेरिस कांग्रेस के प्रस्ताव में एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के लिए एक ऐसा कार्यक्रम तय किया जा रहा था, जिसमें सर्वहारा वर्ग की फौरी मांगों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया गया था. इसके साथ ही, बहुत जोर देकर यह भी कहा गया था कि ये मांगें ''ऐसे सभी देशों में, जहां पूंजीवादी उत्पादन पद्धति का बोलबाला है, बिल्कुल अपरिहार्य हैं'' तभी वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के विनाशकारी असर का मुकाबला किया जा सकता है.''

राजनीतिक संघर्ष और युद्ध का सवाल

लेकिन, पेरिस कांग्रेस आंशिक मांगों के एक कार्यक्रम की घोषणा करके ही संतुष्ट नहीं हो गयी. अंतर्राष्ट्रीय श्रम की रक्षा पर जो प्रस्ताव स्वीकार किया गया, उसमें कहा गया था; ''श्रम तथा समूची मानव जाति का उद्धार अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एक वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा वर्ग ही कर सकता है, जिसे राजनीतिक सत्ता जीतनी ही होगी, ताकि वह पूंजी का खात्मा कर सके और उत्पादन के साधनों को, सार्वजनिक संपत्ति में तब्दील कर सके.'' इस प्रकार, मजदूर वर्ग की फ़ौरी आवश्यकताओं के लिए संघर्ष को समाजवाद के उसके अंतिम लक्ष्य से जोड़ा गया था.

जिस समय पेरिस कांग्रेस हुई, यूरोप में सैन्यवाद तथा युद्ध का खतरा बढ़ता आ रहा था. समाजवादी पार्टियों के नेता और, सबसे प्रमुख रूप से फ्रेडरिख एंगेल्स पहले ही, मजदूर वर्ग द्वारा युद्ध का विरोध किये जाने की लाइन तय करने में लगे हुए थे. इसलिए, पेरिस कांग्रेस ने स्थायी फौजों को भंग किये जाने और समूची जनता की सेनाओं के गठन की मांग करते हुए एक प्रस्ताव स्वीकार किया. इस प्रस्ताव में पूंजीवाद तथा युद्धों के प्रत्यक्ष रिश्ते को उजागर किया गया था और इस सचाई को रेखांकित किया गया था कि कभी युद्ध न होने की बेहतरीन गारंटी है, दुनिया भर में समाजवाद की विजय.

मई दिवस को अंतर्राष्ट्रीय रूप दिया गया

यही पृष्ठभूमि थी, जिसमें पेरिस कांग्रेस ने मई दिवस के पालन को अंतर्राष्ट्रीय रूप देने का एक प्रस्ताव पारित किया. इस प्रस्ताव में कहा गया था; ''यह कांग्रेस, एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के आयोजन का फैसला लेती है, ताकि एक निश्चित दिन को सभी देशों में तथा सभी शहरों में मेहनतकश जनता, शासन से श्रम घंटों को कानूनी तौर पर घटाकर ८ घंटा करने की मांग करे और साथ ही पेरिस कांग्रेस की दूसरी मांगें पूरी किये जाने की भी आवाज उठाये. चूंकि अमरीकी फेडरेशन आफ लेबर दिसंबर १८८८ की अपनी सेंट लुइस कन्वेंशन में पहले ही ऐसे ही प्रदर्शन के लिए १ मई १८९० की तारीख तय कर चुकी है, इसलिए इस तारीख को अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के लिए स्वीकार किया जाता है. विभिन्न देशों के मजदूरों को, अपने-अपने देशों के हालात को ध्यान में रखकर, इस प्रदर्शन का आयोजन करना है''

१८९१ में ब्रुसेल्स में हुई अपनी अगली कांग्रेस में सोशलिस्ट इंटरनेशनल ने मजदूर वर्ग का आह्वान किया कि आठ घंटे के श्रम दिन की मांग करने और राष्ट्रों के बीच शांति सुनिश्चित करने के लिए पहली मई का पालन करे. शांति की रक्षा का लक्ष्य मई दिवस के पालन में एक महत्वपूर्ण प्रगति का सूचक था क्योंकि, शांति की रक्षा के बिना मजदूर वर्ग की एकजुटता का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है. कार्ल मार्क्स के दिशा निर्देशन में पहला इंटरनेशनल फ्रांस-जर्मनी युद्ध (१८७०) पर अपने घोषणापत्र में इससे पहले ही शांति की रक्षा करने तथा अपनी एकजुटता कायम रखने के लिए मजदूर वर्ग का आह्वान कर चुका था. मई

दिवस पर युद्ध के खिलाफ आवाज उठाने तथा राष्ट्रों के बीच शांति की मांग करने का दूसरे इंटरनेशनल का आह्वान, पहले इंटरनेशनल द्वारा स्थापित अंतराष्ट्रवाद की परंपरा का ही हिस्सा था.

कांग्रेस के प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि जहां कहीं संभव हो, हड़तालों के आयोजन के जरिये मई दिवस का पालन किया जाय.

पहला मई दिवस ऐसे मनाया गया

मजदूर वर्ग की बढ़ती गतिविधियों और उसकी बढ़ती हुई अंतर्राष्ट्रवादी चेतना के फलस्वरूप ही पेरिस कांग्रेस का आयोजन किया जा सका था. इससे पहले यूरोप के सभी देशों में अनेक हड़तालें हुई थीं और चुनावी तथा संसदीय मंचों पर मजदूर वर्ग की राजनीतिक प्रगति हुई थी. इसलिए, इस पर किसी को अचरज नहीं होना चाहिए कि मई दिवस के पालन के इंटरनेशनल के आह्वान का यूरोप तथा अमरीका में जबर्दस्त तथा उत्साहपूर्ण स्वागत हुआ.

१ मई १८९० को यूरोप के प्राय: सभी देशों के अधिकांश नगरों में सैकड़ों तथा हजारों की तादाद में मजदूर सड़कों पर निकल आये. जर्मनी, फ्रांस तथा डेनमार्क के कुछ नगरों में तो इस अंतर्राष्ट्रीय दिवस के पालन के लिए अनेक उद्योगों में हड़तालें हुईं. अनेक नगरों में जबर्दस्त प्रदर्शन हुए. वियना में एक लाख, बुडापेस्ट में साठ हजार, मर्सेलिस तथा ल्योंज में चालीस-पचास हजार, प्राग में पेंतीस हजार और रोबैक्स, लिली, स्टाकहोम, शिकागो तथा दूसरे अनेक शहरों में २० से ३० हजार तक लोगों ने प्रदर्शन में हिस्सा लिया. वार्सा में प्रदर्शनकारियों की संख्या बीस हजार थी और व्लोव्ल में तीन हजार (देखिए हिस्ट्री आफ इंटरनेशनल वर्किंग क्लास मूवमेंट, खंड-२)

स्पेन तथा ब्रिटेन में, मई के पहले रविवार, ४ मई को अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता दिवस मनाया गया. बार्सिलोना में करीब एक लाख लोगों ने प्रदर्शन में हिस्सा लिया.

मई दिवस और एंगेल्स

एंगेल्स ने पहले मई दिवस के प्रदर्शन के लिए लंदन के मजदूरों की तैयारियों में हिस्सा लिया. मजदूरों पर सुधारवादी ट्रेड यूनियन नेताओं के प्रभाव के बावजूद स्थिति बहुत ही अनुकूल थी. १८८० की शुरूआत में ब्रिटेन में मजदूरों के आंदोलन में, और खास तौर पर लंदन में, जोरदार उभार आया था. इस उभार की वजह यह थी कि एलिनोर मार्क्स एवलिंग, डा० एडवर एवलिंग, मजदूर नेता टाम मेन, जान बुर्न्स तथा दूसरे नेताओं की दृढ़ निश्चयी गतिविधियों से गैस तथा कोयला मजदूरों जैसे अपेक्षाकृत कम दक्ष मजदूरों को मजदूर आंदोलन में लाने में सफलता मिली थी. ये सर्वहारा दस्ते अकुशल मजदूरों की अपनी अलग ट्रेड यूनियनों में संगठित हो गये थे, क्योंकि उन्हें पुरानी ट्रेड यूनियनों में दाखिल करने से इनकार कर दिया गया था. एंगेल्स ने, उनसे जहां तक बन पड़ा, इस जन आंदोलन की और

शासक वर्गों ने इसके पीछे छिपी चुनौती को पहचान लिया और अनेक जगहों में उन्होंने नृशंस गोलीबारियों तथा आतंक के जरिये इस प्रदर्शन को दबाने की कोशिश की. १८९० की पहली मई को इटली में पुलिस के साथ मजदूरों की भिड़ंत हुई और उसके अगले मई दिवस पर फ्रांस, इटली तथा स्पेन में ऐसी भिड़ंतें हुईं. फ्रांस के उत्तरी भाग के शहर फार्मीस में शांतिपूर्ण मई दिवस प्रदर्शन का जवाब बंदूक की गोलियों से दिया गया. औरतों तथा बच्चों समेत, कम से कम ५० लोग गोलियां खाकर गिर पड़े, जिनमें से दस ने वहीं दम तोड़ दिया. फार्मीस हत्याकांड की फ्रांस के मजदूरों ने कड़ी भर्त्सना की. इस हत्याकांड के कुछ समय बाद हुए एक संसदीय चुनाव में सोशलिस्टों ने पाल लाफार्ग को अपना उम्मीदवार नामजद किया (फार्मीस गोलीकांड के खिलाफ आवाज उठाने के लिए लाफार्ग उस समय जेल में बंद थे). चुनावों ने पाल लाफार्ग को जोरदार ढंग से जिताकर प्रतिनिधि सदन में पहुंचा दिया.

उस समय रूस में ट्रेड यूनियन आंदोलन गैरकानूनी था और राजनीतिक पार्टियों को किसी कानूनी गतिविधि की इजाजत नहीं थी. लिहाजा, वहां हर मई दिवस पर बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियों, सजाओं तथा गोलीकांडों का दौर-दौरा रहता था. इसके बावजूद, मई दिवस की अपील बढ़ती ही गयी और वह जनवाद की लड़ाई में ज्यादा से ज्यादा प्रमुख भूमिका अदा करने लगा.

जैसे-जैसे साल गुजरते गये, विभिन्न देशों से मजदूर वर्ग के नये-नये दस्ते मई दिवस के पालन में शामिल होते गये और सर्वहारा वर्ग की अंतर्राष्ट्रवादी एकता का दायरा बढ़ता गया. अब हर साल पहली मई को औद्योगिक देशों के हजारों मजदूरों की आवाज के साथ उपनिवेशों के औद्योगिक नगरों के हजारों मजदूरों की आवाज भी शामिल होने लगी और मई दिवस अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्रता, समाजवाद और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के खात्मे के लिए संघर्ष का प्रतीक बन गया. मई दिवस, साम्राज्यवादी-पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ, विरोध की व्यापकतम अभिव्यक्ति बन गया. अलग-अलग फैक्टरियों तथा यहां तक कि पूरे-पूरे औद्योगिक जिलों तक के जुझारू मजदूर, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा की मांगों के साथ अपनी एकजुटता का इजहार करने के लिए हड़ताल करने लगे.

मई दिवस, समूचे मजदूर आंदोलन की परंपरा बन गया.

रूस में मई दिवस

रूस में, लेनिन तथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के नेतृत्व में मई दिवस का पालन मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी कार्रवाई की लामबंदी का केंद्र बन गया. लेनिन तथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ने यह सुनिश्चित किया था कि मई दिवस महज एक मांगपत्र तक घटकर न रह जाय, बल्कि उसमें पूंजीपतियों के शासन का खात्मा करने का क्रांतिकारी लक्ष्य बराबर सामने रहे और युद्ध का विरोध करते हुए तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति का पक्ष लेते हुए, सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद का झंडा हमेशा बुलंद रखा जाय. लेनिन ने यह भी सुनिश्चित किया कि मई दिवस,

लंदन गोदी की १८८९ की हड़ताल की मदद की. आखिरकार अब इंग्लैंड में भी सर्वहारा वर्ग के आंदोलन में एक नयी क्रांतिकारी हवा बहने लगी थी. लंदन के मई दिवस के प्रदर्शन में यह सचाई उभरकर सामने आ रही थी (देखिए, फ्रेडरिख एंगेल्स की जीवनी-अंग्रेजी-पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, पृ ५०६).

जर्मनी में मई दिवस की रैली, रविवार ४ मई को हुई. एंगेल्स ने इस रैली को सच्चे अर्थों में अभिभूत कर देनेंवाली रैली कहा था और आगस्ट बेबल के नाम अपनी चिट्ठी में लिखा था; ''मैं चौथे मंच (एक बड़े ट्रक) पर था और भीड़ का एक हिस्सा, शायद उसका तिहाई या चौथाई हिस्सा ही मुझे दिखायी दे रहा था. फिर भी जहां तक निगाह जाती थी, लोगों की ठेलमठेल दिखायी देती. ढाई-तीन लाख लोग जमा थे, जिनमें से तीन-चौथाई प्रदर्शनकारी मजदूर थे. एवलिंग, लाफार्ग तथा स्तेप्न्याक मेरे मंच से बोले, मैं तो एक दर्शक भर था.'' एंगेल्स ने निम्नलिखित शब्दों के साथ अपना पत्र समाप्त किया; ''मैं जब ट्रक से उतरा तो मेरा सर गर्व से दो इंच ऊपर उठ चुका था.''

१८९० की पहली मई को कम्युनिस्ट घोषणापत्र के चौथे जर्मन संस्करण की भूमिका लिखते हुए एंगेल्स ने लिखा :

''दुनिया के मजदूरो, एक हो! —जब यह नारा हमने आज से बयालीस साल पहले— प्रथम पेरिस क्रांति के ठीक पहले, जब सर्वहारा वर्ग स्वयं अपनी मांगों को लेकर सामने आया था, बुलंद किया था , तब बहुत थोड़े लोगों ने उसे प्रतिध्वनित किया था. किंतु २८ सितंबर १८६४ को पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों के सर्वहारा ने मिलकर अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संघ की स्थापना की,जिसकी स्मृति गौरवपूर्ण है. यह सच है कि इंटरनेशनल स्वयं केवल नौ साल जीवित रहा. किंतु उसने सभी देशों के सर्वहारा का जो अविनाशी एका कायम कर दिया था, वह आज भी जीवित है और पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली है. इसका सबसे बड़ा साक्षी आज का यह दिन है, क्योंकि आज के दिन, जब मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं, यूरोप और अमरीका के सर्वहारा अपनी जुझारू शक्तियों का पुनरवीक्षण कर रहे हैं, जो पहली बार मैदान में उतारी गयी हैं. एक सेना की तरह, एक झंडे के नीचे, एक तात्कालिक उद्देश्य के लिए— १८६६ में इंटरनेशनल की जेनेवा कांग्रेस द्वारा और फिर १८८९ में पेरिस की मजदूर कांग्रेस द्वारा घोषित आठ घंटे के काम के दिन को कानून द्वारा स्थापित कराने के उद्देश्य से—मैदान में उतारी गयी हैं. और, आज के दृश्य से सभी देशों के पूंजीपतियों और जमींदारों की आंखें खुल जायेंगी और वे देख लेंगे कि तमाम देशों के मेहनतकश लोग आज सचमुच एक हैं

''काश, आज मार्क्स भी अपनी आंखों से इस दृश्य को देखने के लिए मेरे साथ होते !''

एक बार फिर हत्याओं और गोलीबारियों का दौर-दौरा

मजदूर वर्ग की यह पहली अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई भी खून-खराबे के बिना नहीं गुजर सकी

अंतर्राष्ट्रवाद के आम नारे उठाने तक सीमित, सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति का एक दिन भर बनकर न रह जाय, बल्कि रूसी सर्वहारा वर्ग के सामने मौजूद फौरी राजनीतिक कामों को पूरा करने के लिए लामबंदी का बिंदु और जनवादी तथा समाजवादी क्रांतियों में नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में मजदूर वर्ग की लामबंदी का औजार भी बने. मई दिवस पर लेनिन ने जो कुछ भी लिखा था, उसके पालन में जो भी सुधार लाने की उन्होंने कोशिश की, उन सबका उद्देश्य यहीं सुनिश्चित करना था कि मजदूर वर्ग अपनी उपर्युक्त भूमिका पूरी करे और मई दिवस की क्रांतिकारी परंपराओं तथा विचारधारा पर कायम रहे.

रूस में मई दिवस की पहली सभा सेंट पीटर्सबर्ग के ब्रुस्नेव संगठन ने आयोजित की थी. यह सभा १८९१ की मई के पहले रविवार को गुपचुप ढंग से आयोजित की गयी थी और एक ऐसी जगह में आयोजित की गयी थी, जहां से पुलिस का छापा पड़ने पर आसानी से भागा जा सकता था. सभा के वक्ताओं में से एक ने कहा था; ''हमें सबसे पहले तथा सर्वप्रमुख रूप से जरूरत है, अपने हालात में सुधार के लिए सचेत रूप से यत्नशील मजदूरों की एक संगठित शक्ति की, जोकि सरकार को उन्हें राजनीतिक अधिकार देने के लिए मजबूर कर सके क्योंकि यही एकमात्र ऐसी स्थिति है, जो हमें वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण की दिशा में बढ़ने का अवसर देती है.

लेनिन और मई दिवस की मांगें

दस साल के अंदर-अंदर रूस में मई दिवस का पालन बड़ी तेजरफ्तार से राजनीतिक प्रगति कर चुका था. ''खारकोव में मई दिवस'' नाम के सन १९०० के अपने पेंफलेट में लेनिन ने लिखा; ''खारकोव में मई दिवस के समारोह को असाधारण महत्व की घटना बना देनेवाली चीज क्या थी? इस हड़ताल में बड़े पैमाने पर मजदूरों की शिरकत, सड़कों पर विशाल जन सभाएं, लाल झंडों का लहराना, घोषणाओं में प्रस्तुत मांगों को उठाया जाना और इन मांगों का क्रांतिकारी चरित्र;८ घंटे के श्रम दिन तथा राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग ने इस दंतकथा को—कि रूस के मजदूर अभी राजनीतिक संघर्ष के लिए परिपक्व नहीं हुए हैं, कि शुद्ध आर्थिक संघर्ष को ही उनकी मुख्य चिंता होना चाहिए, जिसकी कि उन्हें आंशिक राजनीतिक सुधारों के लिए आंशिक राजनीतिक आंदोलन से न कि रूस की समूची राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष से, जरा-जरा करके तथा बहुत धीरे-धीरे ही अनुपूर्ति करनी चाहिए—खारकोव के मई दिवस कार्यक्रमों ने पूरी तरह से गलत साबित कर दिया है.'' (समग्र रचनाएं, अंग्रेजी, खंड-४, पृ० ३५८)

यहां लेनिन ने इस बात को रेखांकित किया है कि मजदूर, आर्थिक मांगों के दायरे को तोड़कर आगे निकल गये हैं और मई दिवस पर उन्होंने राजनीतिक नारों को, बुनियादी राजनीतिक मांगों को, उठाया है. लेकिन, इसके साथ ही लेनिन खारकोव के कामरेडों को यह भी बताते हैं कि हर तरह की फुटकर आर्थिक मांगों को मई दिवस की घोषणा में शामिल करना सही नहीं है. इसमें उठायी जानेवाली आर्थिक मांगें सही मानों में क्रांतिकारी प्रकृति की होनी

चाहिए, जो मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी चेतना को बढ़ायें और राजनीतिक संघर्ष में मददगार हों. इस सिलसिले में लेनिन ने लिखा; ''मिसाल के तौर पर हम रेल्वे वर्कशाप कर्मचारियों द्वारा उठायी गयी मांगों को ले सकते हैं. चौदह में से ग्यारह मांगों का ताल्लुक मामूली सुधारों से है, जो बड़ी आसानी से मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था में भी हासिल किये जा सकते हैं— मजदूरी में बढ़ोतरी, घंटों में कमी, गड़बड़ियों को दूर किया जाना. इन मांगों के साथ निम्नलिखित तीन मांगें जुड़ी हुई हैं, जैसे वे उन्हीं जैसी मांगें हों; (४) आठ घंटे का दिन लागू करना, (७) मई दिवस की घटनाओं के बाद मजदूरों का विक्टिमाइजेशन न होने की गारंटी और (१०) मजदूरों तथा मालिकान के बीच के विवादों के निपटारे के लिए, दोनों फरीकों की एक संयुक्त कमेटी. इन मांगों में पहली (४ नंबर की) मांग विश्व सर्वहारा वर्ग द्वारा रखी गयी आम मांग है और इस मांग को उठाये जाने का तथ्य यह इंगित करता लगता है कि खारकोव के आगे बढ़े हुए मजदूरों को विश्व समाजवादी मजदूर वर्ग आंदोलन के साथ अपनी एकजुटता का एहसास है. लेकिन, ठीक इसी वजह से इसे फोरमैनों के साथ बेहतर सलूक या मजदूरी में १० फीसद बढ़ोतरी जैसी मामूली मांगों के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए था. वेतनवृद्धियों तथा बेहतर बरताव की मांगें अलग-अलग हर पेशे के मजदूरों द्वारा अपने मालिकान के सामने रखी जा सकती हैं (और रखी जानी चाहिए), ये पेशागत मांगें हैं, जो मजदूरों की अलग-अलग श्रेणियों द्वारा रखी जाती हैं. लेकिन, आठ घंटे के दिन की मांग समूचे सर्वहारा वर्ग की मांग है, जो अलग-अलग मालिकान के सामने नहीं बल्कि समूचे मौजूदा सामाजिक तथा राजनीतिक ढांचे के प्रतिनिधि के रूप में शासक अधिकारियों के सामने, समूचे पूंजीपति वर्ग के सामने, उत्पादन के सारे साधनों के मालिकों के सामने उठायी जाती हैं. आठ घंटे के दिन की मांग ने विशेष महत्व प्राप्त कर लिया है. यह अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन के साथ एकजुटता का ऐलान है. हमें, मजदूरों को यह अंतर समझाना होगा, ताकि वे आठ घंटे के दिन की मांग को मुफ्त रेल टिकट या किसी वाचमैन की बर्खास्तगी जैसी मांगों के स्तर पर न उतार डालें. पूरे साल भर मजदूर, कभी यहां तो कभी कहीं और, लगातार अपने मालिकान के सामने तरह-तरह की आंशिक मांगें रखते हैं और उन्हें पूरा कराने के लिए लड़ते हैं. इस संघर्ष में, मजदूरों की मदद करते हुए समाजवादियों को हमेशा सभी देशों में मुक्ति के लिए सर्वहारा के संघर्ष से इसके रिश्ते का खुलासा करना चाहिए. और, पहली मई का दिन, ऐसा दिन होना चाहिए कि मजदूर निष्ठापूर्वक यह घोषणा करें कि वे इस रिश्ते को समझते हैं और इस संघर्ष में दृढ़तापूर्वक शरीक होते हैं.'' (पृ ३६२-६३, खंड-४)

लेनिन ने इस प्रकार से, मई दिवस की क्रांतिकारी अवधारणा को उस सुधारवादी अवधारणा से अलग किया था, जो इसे आंशिक मांगों की घोषणा के एक मौके में ही तब्दील कर देने की कोशिश करती है.

मई दिवस और ठोस क्रांतिकारी काम

लेनिन ने मजदूरों को यह भी सिखाया कि मई दिवस का अर्थ, अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता की

वर्ग का आह्वान किया गया था. लेनिन ने लिखा; ''घर में हमारे लोग भूख तथा अभावों से मर रहे हैं, फिर भी उन्हें हजारों मील की दूरी पर स्थित तथा विदेशी जातियों द्वारा निर्वासित विदेशी इलाकों के लिए एक विनाशकारी और निरर्थक युद्ध में घसीटा गया है. हमारे लोग राजनीतिक दासता में पिस रहे हैं, लेकिन फिर भी उन्हें दूसरे जनगणों को गुलाम बनाने के लिए एक युद्ध में घसीटा गया है. हमारी जनता देश में राजनीतिक बदलाव की मांग कर रही है, लेकिन दुनिया के दूसरे सिरे पर तोपों की गरज के जरिये उसका ध्यान बंटाने की कोशिश की जा रही है.''

लेनिन ने मजदूरों का आह्वान किया कि जारशाही के खिलाफ निर्णायक युद्ध में प्रवेश करें; ''कामरेड मजदूरो, आइये हम सामने खड़े निर्णायक युद्ध के लिए दुगनी ऊर्जा से तैयारी करें, सामाजिक-जनवादी सर्वहारा की कतारें ज्यादा से ज्यादा कसने दो. उनका संदेश ज्यादा से ज्यादा दूर तक फैलने दो. मजदूरों की मांगों के लिए प्रचार को ज्यादा से ज्यादा निर्भीकता से चलाने दो. मई दिवस का आयोजन हमारे लक्ष्य के लिए हजारों नये योद्धा जीते और सभी जनगणों की स्वतंत्रता के लिए, सभी मेहनत करनेवालों को पूंजीवाद के जुए से मुक्ति दिलाने के महान संघर्ष में, हमारी कतारें बढ़ती जायें.

आठ घंटे का दिन, जिंदाबाद !

अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सामाजिक- जनवाद जिंदाबाद !

अपराधी और लुटेरी निरंकुश जारशाही मुर्दाबाद.'' (पृ० २०२, खंड-७)

१९०५ की क्रांति के दौरान मई दिवस

१९०५ का साल क्रांति का साल था और इस मई दिवस के नारे देश में तेजी से विकसित हो रही क्रांतिकारी परिस्थिति को संबोधित होने चाहिए थे. रूस-जापान युद्ध अब भी जारी था और इसका विरोध किया जाना तथा मजदूर वर्ग को समाजवादी आंदोलन की अंतर्राष्ट्रीय एकता का स्मरण कराना जरूरी था. १९०५ के मई दिवस के लिए लेनिन ने एक और पर्चा लिखा ; ''कामरेड मजदूरो, दुनिया भर के मजदूरों का महान त्यौहार (छुट्टी का दिन) आ रहा है. पहली मई को वे प्रकाश तथा ज्ञान के लिए अपनी जागृति का; सारे उत्पीड़न, सारे शोषण, सारे निरंकुश शासन के खिलाफ, समाजवादी समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष में, एक बिरादराना इकाई में अपने जुड़े होने का उत्सव मनाते हैं...

''विभिन्न जातीयताओं तथा विभिन्न धर्मों के मजदूरों के बीच शत्रुता का नाश हो. यह शत्रुता, लुटेरों तथा अत्याचारियों को ही फायदा पहुंचा सकती है, जो सर्वहारा के अज्ञान तथा उसकी फूट के सहारे जिंदा हैं. यहूदी और इसाई, आर्मेनियाई और तातार, पोल और रूसी, फिन और स्वीड, लाट तथा जर्मन, सभी एक साथ होकर एक ही झंडे—समाजवाद—के तले मार्च करते हैं... पहली मई को, सभी देशों के मजदूरों की यह एकता, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक-जनवाद की ताकत, अपनी कतारों को तौलती है और आगे के स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व

आम घोषणा भर नहीं होता बल्कि उसे हर देश के मजदूर वर्ग के सामने मौजूद ठोस क्रांतिकारी कामों को भी उठाना होता है.

क्रांतिकारी महत्ववाली फौरी आर्थिक मांगों को, अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता तथा समाजवाद की इच्छा की आम अभिव्यक्ति के साथ जोड़ देना ही काफी नहीं है. समाजवाद के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए यह भी जरूरी है कि हर देश का मजदूर वर्ग अपने सामने खड़ी क्रांति की ठोस समस्याओं से आमने-सामने हो. इसलिए, यह जरूरी है कि पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष के हिस्से के रूप में, इन समस्याओं को मई दिवस की सभाओं में उठाया जाय. उत्तरी (नार्दन) लीग के नाम अपने पत्र में १९०२ में लेनिन ने लिखा था; ''यह जोड़ना चाहिए था कि हमारे देश में मई दिवस, निरंकुश तंत्र के खिलाफ, राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग का प्रदर्शन भी बन गया. इस पवित्र दिन के अंतर्राष्ट्रीय महत्व को रेखांकित करना ही काफी नहीं है. उसे, सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजनीतिक मांगों के साथ भी जोड़ा जाना चाहिए.'' (पृ १६८, खंड-६)

१९०३ के मई दिवस के पूर्व भी लेनिन इसी नुक्ते पर जोर दे रहे थे; ''आखिरी बात यह कि हमें मजदूरों का उत्तर सड़कों पर सुनाना चाहिए, प्रदर्शनों के जरिये अपनी मांगों का ऐलान करना चाहिए और मजदूरों की संख्या, शक्ति, उनकी वर्ग चेतना तथा दृढ़ता का खुले आम प्रदर्शन करना चाहिए. आइये, आनेवाले मई दिवस के समारोह को अपनी सर्वहारा मांगों का आम ऐलान ही नहीं बल्कि २६ फरवरी के घोषणापत्र का एक खास तथा सुनिश्चित जवाब भी बनायें''. (पृ० ३४८-५०, खंड-६) २६ फरवरी का घोषणापत्र जनता को बेवकूफ बनाने के लिए रूसी जारों का घोषणापत्र था.

लेनिन, मई दिवस पर जिन राजनीतिक मांगों को उठाये जाने की मांग कर रहे थे वे थीं; (१) संगठन बनाने की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता को तत्काल तथा बिना शर्त मान्यता और सभी राजनीतिक बंदियों तथा धार्मिक संप्रदायों के सदस्यों को आम माफी, (२) सभी नागरिकों द्वारा निर्वाचित एक संविधान सभा बुलाये जाने और एक निर्वाचित सरकार कायम किये जाने की मांग, (३) एक कानून के जरिये दूसरे सभी सामाजिक तबकों के साथ किसानों की पूरी बराबरी को तत्काल तथा बिना शर्त मान्यता और देहाती इलाकों में सामंतवाद के खात्मे के लिए किसान कमेटियों का बुलाया जाना. संक्षेप में, लेनिन की मांग थी कि परिपक्व होती जनवादी क्रांति की मांगों को मई दिवस पर पूरी तरह अभिव्यक्त किया जाना चाहिए.

रूस-जापान युद्ध

१९०४ तक आते-आते रूस-जापान युद्ध छिड़ चुका था. अब सवाल मजदूर वर्ग के आम तौर पर युद्ध के खिलाफ होने का नहीं रहा था बल्कि जापान के खिलाफ जार के युद्ध का विरोध करने का था. अपने को समाजवादी कहनेवाले अनेक सोशल-डेमोक्रेट युद्ध के अपने विरोध में डगमगाने लगे और कुछ तो पूंजीवादी अंधराष्ट्रवाद की लपेट में आ गये. इन्हीं हालात में लेनिन ने मई दिवस के लिए एक पर्चा लिखा था, जिसमें युद्ध का विरोध करने के लिए मजदूर

के अनथक तथा अविचल संघर्षों के लिए अपनी कतारों को एकजुट करती है.''

पर्चे में आगे कहा गया था; ''सुदूर पूर्व में नष्ट होने के लिए सैकड़ों हजार युवा जिंदगियां जनता से छीनकर झोंक दी गयी हैं...और यह युद्ध हो किसलिए रहा है? मंचूरिया के लिए, जिसे हमारी लुटेरी सरकार ने चीन से छीना है. विदेशी इलाकों के लिए रूसी खून बहाया जा रहा है और हमारे देश को तबाह किया जा रहा है.

''आइये, इस साल का मई दिवस हमारे लिए जन विद्रोह के उत्सव का मौका बने, आइये हम इसके लिए तैयारी करें और अत्याचारियों पर निर्णायक हमले के संकेत का इंतजार करें...आइये तब, इस महान लड़ाई की तैयारी करें. कामरेड मजदूरो, मई दिवस को फैक्टरियों तथा मिलों में काम बंद कर दो या सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी की कमेटियां सलाह दें तो हथियार उठाओ.. प्रसिद्ध ९ जनवरी को सेंट पीटर्सबर्ग के मजदूरों ने ऐलान किया था : स्वतंत्रता या मृत्यु. रूस के हम सारे मजदूर, इस महान युद्ध-घोष को दुहरायेंगे, हम किसी बलिदान से पीछे नहीं रहेंगे, विद्रोह से हम स्वतंत्रता जीतें—स्वतंत्रता के जरिये समाजवाद.

मई दिवस जिंदाबाद !

अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक-जनवाद जिंदाबाद !

मजदूरों और किसानों की आजादी जिंदाबाद !

जनवादी गणराज्य जिंदाबाद !

जारशाही राज मुर्दाबाद !

जारशाही निरंकुशतंत्र मुर्दाबाद !'' (पृ० ३४८-५०, खंड ८)

मजदूर वर्ग की पार्टी, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी, जिसका नेतृत्व लेनिन कर रहे थे, इस प्रकार विभिन्न संघर्षों का नेतृत्व कर रही थी. वह मई दिवस की क्रांतिकारी परंपराओं को बरकरार रखने में, आंशिक मांगों के लिए संघर्ष को लुटेरे युद्ध के विरोध तथा पूंजीवादी व्यवस्था का खात्मा करने के दृढ़ निश्चय के साथ जोड़ने में, समर्थ थी. इसके साथ ही, सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टी, आगामी जनवादी क्रांति के काम पूरे करने और समाजवाद की राह हमवार करने के काम को पूरा करने के लिए रूस की तत्कालीन परिस्थितियों में जरूरी राजनीतिक नारों तथा क्रांतिकारी मांगों को भी उठा रही थी. कदम-ब-कदम क्रांतिकारी स्थिति विकसित होती गयी तथा रूस में मई दिवस समूची जनता की क्रांतिकारी मांगों को प्रतिबिंबित करने लगा और १९०५ में लेनिन, मई दिवस पर हथियार उठाने का आह्वान करने की स्थिति में थे.

इन तमाम सालों में रूस, क्रांतिकारी आंदोलन का तूफानी केंद्र बना रहा था. बोल्शेविक पार्टी तथा लेनिन के नेतृत्व में और मार्क्स तथा एंगेल्स की क्रांतिकारी शिक्षाओं पर चलते हुए,

रूस का मजदूर वर्ग १९०५ की हार से उबरने में सफल रहा और १९१७ में उसन सफल समाजवादी क्रांति संपन्न की.

क्रांतिकारी परंपरा से फिसलना

लेकिन, यूरोप के विकसित पूंजीवादी देशों में स्थिति बिल्कुल भिन्न थी, जिनमें से कुछ तो किसी न किसी समय मजदूर वर्ग के मार्क्सवादी आंदोलन की सबसे अगली कतार में भी रह चुके थे. पूंजीवाद के ''शांतिपूर्ण'' दौर, पूंजीवाद के साम्राज्यवाद में विकसित होने तथा उपनिवेशों की लूट से लाभ पाकर साम्राज्यवादी देशों में एक सुविधा प्राप्त श्रम अभिजातशाही के उदय और मजदूरों के लिए संसदीय तथा जनतांत्रिक अधिकारों में एक हद तक विस्तार ने, समाजवाद की दिशा में शांतिपूर्ण विकास के बारे में भ्रम पैदा कर दिये. सामाजिक-जनवादी आंदोलन के भीतर, धीरे-धीरे एक संशोधनवादी प्रवृत्ति उभरने लगी, जो वर्ग संघर्ष तथा क्रांति को पूर्णत: अनावश्यक मानती थी और इसलिए उसने मजदूर वर्ग के आंदोलन की जुझारू परंपरा को, मई दिवस के पालन में अंतर्निहित परंपराओं को छोड़ना शुरु कर दिया.

संशोधनवादी प्रवृत्तियों तथा दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व मुख्यत: ट्रेड यूनियन नेतृत्व करता था. वास्तव में ब्रिटिश ट्रेड यूनियनें एक लंबे अर्से से एक सुधारवादी तथा वर्ग समझौतावादी लाइन पर चलती आ रही थीं और हमेशा से हड़तालों के जरिये मई दिवस के पालन को ठुकराती रही थीं. १८७९ में ही ब्रिटिश ट्रेड यूनियन आंदोलन के सिलसिले में एंगेल्स लिख चुके थे; ''कई साल से ब्रिटिश मजदूर आंदोलन उच्चतर मजदूरी तथा अपेक्षाकृत कम घंटों के लिए हड़तालों के एक संकीर्ण चक्र को, एक तात्कालिक आवश्यकता या प्रचार व संगठन के साधन के रूप में नहीं बल्कि निराशाजनक रूप से अंतिम लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत करता रहा है. ट्रेड यूनियनें सिद्धांत के रूप में हर राजनीतिक कार्रवाई पर निषेध तक लगाती हैं और इस प्रकार उनके घोषणापत्र, एक वर्ग के रूप में मजदूर वर्ग की हर आम गतिविधि में हिस्सेदारी पर पाबंदी लगाते हैं...इस तथ्य को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की जानी चाहिए कि इस समय (यूरोपीय महाद्वीप में) यहां किसी वास्तविक मजदूर आंदोलन का अस्तित्व ही नहीं है.''

यह थी सोशलिस्ट इंटरनेशनल की स्थापना से एक दशक पहले की स्थिति. यही रुझान महाद्वीपीय पार्टियों में भी पनपने लगा, जिन्होंने—जैसा कि स्वाभाविक था—मई दिवस को उसकी क्रांतिकारी अंतर्वस्तु से वंचित करने और पूंजीवादी व्यवस्था के ढांचे में ही आर्थिक सुधार की कुछ मांगें उठाने तक ही सीमित करने की कोशिश की.

जेना कांग्रेस पर लेनिन के विचार

लेनिन ने १९०५ में ही जर्मन पार्टी में इस घटनाविकास को पहचान लिया था. **जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी की जेना कांग्रेस** नाम के अपने लेख में लेनिन ने लिखा था : ''राजनीतिक हड़ताल के प्रश्न से पहले जेना में विचारार्थ उठा एक और प्रश्न भी रूस के

हड़ताल तथा उसके साथ सड़कों पर हुए प्रदर्शनों, क्रांतिकारी पर्चों, मजदूरों की सभाओं में हुए क्रांतिकारी भाषणों ने साफ तौर पर दिखा दिया है कि, रूस एक क्रांतिकारी उभार के दौर में प्रविष्ट हो गया है.'' (पृ० २०८, खंड-१८)

१९१२-१३ के मई दिवस

१९१२ के मई के महत्व दिवस को रेखांकित करते हुए लेनिन ने कहा था कि इस दिन मजदूर वर्ग, समूची जनता के नेता के रूप में सामने आया है. सेंट पीटर्सबर्ग कमेटी द्वारा प्रकाशित पर्चे में लेनिन ने लिखा; ''आइये, हमारी मांगें हों, एक संविधान सभा, आठ घंटे का काम का दिन और भूरियासतों का अंत किया जाना.'' पर्चे में आगे आह्वान था; ''जारशाही सरकार मुर्दाबाद, ३ जून का निरंकुशतापूर्ण संविधान मुर्दाबाद, जनवादी गणराज्य जिंदाबाद, समाजवाद जिंदाबाद.

''सेंट पीटर्सबर्ग के लाखों मजदूरों ने, जिनका रूस भर के मजदूर अनुसरण कर रहे थे, हड़तालों तथा सड़कों पर प्रदर्शनों का रास्ता लिया और पूंजीवादी समाज के विभिन्न वर्गों में से एक के रूप में नहीं, अपने ही आर्थिक नारों भर के लिए नहीं, बल्कि समूची जनता के लिए क्रांति का झंडा उठानेवाले नेता के रूप में समूची जनता की **ओर से** और ऐसे सभी वर्गों को जगाने तथा संघर्ष में खींचने का लक्ष्य लेकर, जिन्हें कि स्वतंत्रता की जरूरत है तथा जो इसके लिए प्रयास करने में समर्थ हैं.''

इस मई दिवस पर क्रांतिकारी मांगों के समर्थन में हड़ताल करनेवालों की संख्या थी तीन लाख.

१९१३ के मई दिवस के प्रदर्शनों का वर्णन करते हुए लेनिन ने एक बार फिर राजनीतिक संघर्ष में मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका पर जोर दिया; ''और अब रूसी मजदूर वर्ग की मई दिवस की कार्रवाई आती है, जिसने पहले रीगा में रिहर्सल किया था और फिर पहली मई को सेंट पीटर्सबर्ग में दृढ़तापूर्वक कार्रवाई की... निकट आती क्रांति के काम एक बार फिर अपनी सारी भव्यता के साथ सामने आ गये हैं और इसका नेतृत्व कररहे आगे बढ़े हुए वर्ग की कतारें, सैकड़ों पुराने क्रांतिकारियों को, जिन्हें हत्यारों का उत्पीड़न तथा मित्रों का साथ छोड़ जाना भी हरा नहीं सका है, तोड़ नहीं सका है; और जनवादियों तथा समाजवादियों की नयी पीढ़ी के लाखों लोगों को स्पष्ट रूप से दिखायी दे रही हैं.

मई दिवस की घटनाओं तथा दमन का वर्णन करते हुए लेनिन ने लिखा; ''मई दिवस से हफ्तों पहले से ऐसा लगने लगा था जैसे सरकार की अक्ल गुम हो गयी है, जबकि फैक्टरियों के मालिक साहबान तो ऐसे लग रहे थे, जैसे उनके पहले कभी कोई अक्ल रही ही न हो. ऐसा लग रहा था जैसे गिरफ्तारियों तथा तलाशियों ने राजधानी में पूरे के पूरे मजदूर इलाकों को उलट-पुलट दिया हो. प्रांत भी, केंद्रों से पीछे नहीं रहे. आफत के मारे फैक्टरी मालिकान सम्मेलन पर सम्मेलन बुला रहे थे और परस्पर विरोधी नारे दे रहे थे: अभी मजदूरों को दंड

लिए बहुत ही शिक्षाप्रद है. यह सवाल, मई दिवस के आयोजनों का था या और ठीक-ठीक कहें (जिस मुद्दे से यह बहस छिड़ी, उसे नहीं बल्कि मामले के सार को लें) तो, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ ट्रेड यूनियन आंदोलन के रिश्ते का. **प्रोलितरी** बहुत बार, जर्मन सामाजिक-जनवादियों पर और अकेले उन्हीं पर भी नहीं, कोलोन ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रभाव की बात कह चुका है. इस कांग्रेस में यह जरूरत से ज्यादा स्पष्ट हो गया कि जर्मनी तक में, जहां मार्क्सवाद की परंपराएं तथा उसका प्रभाव सबसे मजबूत हैं, **समाजवादविरोधी** प्रवृतियां, ब्रिटिश यानी पूरी तरह पूंजीवादी किस्म के ''शुद्ध ट्रेड यूनियनवाद'' की ओर जानेवाली प्रवृतियां, ट्रेड यूनियनों में—याद रहे कि **सामाजिक-जनवादी ट्रेड यूनियनों में**—पनप रही हैं. यही वजह थी कि शाब्दिक मानों में एक मई दिवस प्रदर्शन के सवाल से जेना कांग्रेस में अनिवार्य रूप से ट्रेड यूनियनवाद तथा सामाजिक-जनवाद के सवाल, रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन के अंदर के रुझानों की भाषा में कहें तो अर्थवाद के सवाल उठ खड़े हुए.

''फिशर ने, जिन्होंने मई दिवस के प्रश्न पर रिपोर्ट दी थी, बेलाग ढंग से कहा कि इस तथ्य की उपेक्षा करना बड़ी भारी गलती होगी कि ट्रेड यूनियनों में से समाजवादी भावना, कभी यहां तो कभी वहां करके, गायब हो रही है. हालात यहां तक पहुंच गये हैं कि मिसाल के तौर पर, बढ़इयों (कार्पेंटर्स) की यूनियन के प्रतिनिधि बिंकमान ने ऐसे-ऐसे वक्तव्य दिये हैं तथा प्रकाशित कराये हैं: 'मई दिवस की हड़ताल मानव शरीर में एक विजातीय तत्व की तरह है', कि 'मौजूदा हालात में ट्रेड यूनियनें मजदूर वर्ग के हालात में सुधार का एकमात्र साधन हैं' आदि. और 'बीमारी के इन लक्षणों की,' फिशर ने उन्हें उपयुक्त नाम दिया है, अनेक दूसरे लक्षणों से अनुपूर्ति हो रही है. जर्मनी में, जैसे कि रूस में और वास्तव में हर जगह, एक संकीर्ण ट्रेड यूनियनवाद या अर्थवाद, अवसरवाद (संशोधनवाद) से जुड़ता जा रहा है. इसी बढ़इयों की यूनियन द्वारा प्रकाशित अखबार ने वैज्ञानिक समाजवाद के ढहते आधारों, संकट के सिद्धांत व ढह जाने के सिद्धांत के गलत होने आदि के बारे में लिखा था. संशोधनवादी कैलवर ने मजदूरों से अपने असंतोष का प्रदर्शन करने या मांगें बढ़ाने के लिए नहीं कहा बल्कि मर्यादित होने के लिए कहा था...

''....बेबेल को संकीर्ण ट्रेड यूनियनवाद के खतरे का पूरा एहसास था. उन्होंने, आगे बढ़कर कहा कि उन्हें इस कौशल यूनियन उदासीनता की और भी बदतर मिसालों का पता है: युवा ट्रेड यूनियन नेता तो इस हद तक जाते हैं कि सामान्य रूप में पार्टी का, सामान्य रूप में समाजवाद का, वर्ग संघर्ष के सिद्धांत का मजाक उड़ाते हैं...'' (पृ० २०३, खंड-९)

एक ओर पश्चिमी यूरोप में यह रुझान पनप रहा था और दूसरी ओर रूस में, लेनिन के दिशा-निर्देश में तथा विकसित होती क्रांतिकारी स्थिति के बीच, मई दिवस के प्रदर्शन समूची जनता की क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रतीक बनते जा रहे थे. जून १९१२ में **क्रांतिकारी उभार** नाम के अपने लेख में लेनिन ने लिखा; ''सारे रूस के सर्वहारावर्ग की मई दिवस की

तथा तालाबंदियों की धमकी देते, एक क्षण बाद पहले से ही रियायतें देते तथा काम बंद करने पर राजी हो जाते, अभी सरकार को जुल्म ढाने के लिए उकसाते दिखायी देते तो एक क्षण बाद ही सरकार को भला-बुरा कहते तथा मई दिवस को दूसरी अनेक सरकारी छुट्टियों में शामिल करने की सरकार से अपील करते..

''फिर भी, हालांकि पुलिसवालों ने अधिकतम उत्साह का परिचय दिया था, हालांकि उन्होंने औद्योगिक उपनगरों में ''सफाई'' कर दी थी, हालांकि उन्होंने नयी से नयी संदिग्ध व्यक्तियों की सूचियों के आधार पर अंधाधुंध गिरफ्तारियां की थीं, कुछ हासिल नहीं हुआ. जार के गिरोह तथा पूंजीपति वर्ग के नपुंसक गुस्से पर मजदूर हंस दिये, उन्होंने सरकार की डरावनी तथा दयनीय घोषणाओं का मजाक उड़ाया और व्यंग्यपूर्ण कविताएं रचीं तथा हाथों-हाथ बांट दीं या सुना-सुनाकर मुंहजबानी ही आगे बढ़ा दीं. उन्होंने, जैसे शून्य से, खराब छपाई में छोटे-छोटे पर्चों के नये दस्ते पैदा कर दिये; छोटे तथा सीधे-सादे, किंतु बहुत ही शिक्षाप्रद पर्चे, जिनमें हड़तालों तथा प्रदर्शनों का आह्वान था और जो जनता को सामाजिक-जनवादियों के अविच्छिन्न क्रांतिकारी नारों की याद दिलाते थे जिन्होंने १९०५ में, निरंकुशता तथा राजतंत्र के खिलाफ जनता के पहले हमले का नेतृत्व किया था.''

सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेतृत्व में और लेनिन के मार्ग दर्शन में हर मई दिवस शासक वर्गों के लिए एक दुःस्वप्न बन गया और समूची जनता के लिए प्रेरणा तथा संगठन का स्रोत बन गया.

१९१४ का साम्राज्यवादी युद्ध:सुधारवाद का पतन

१९१४ के अगस्त में, जब पहला साम्राज्यवादी युद्ध छिड़ा तो बोल्शेविक पार्टी ने जारशाही के साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया और युद्ध के संकट को क्रांति करने तथा राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने के लिए इस्तेमाल करने का फैसला किया. शुरू में उसे भारी दमन का सामना करना पड़ा और मजदूर वर्ग में मौजूद सुधारवादी तत्वों की ओर से आ रहे विरोध का मुकाबला करना पड़ा. फिर भी, युद्ध के विरोध की अंतर्राष्ट्रीय परंपराओं पर कायम रहते हुए वह अंततः जारशाही तथा पूंजीपतियों की हुकूमत को उखाड़ फेंकने में और दुनिया के पहले समाजवादी राज्य की स्थापना करने में कामयाब हुई.

लेकिन, दुर्भाग्य से ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, अमरीका तथा दूसरे देशों में ट्रेड यूनियनों के सुधारवादी नेताओं के दबाव में मई दिवस की पहले की जुझारू परंपराएं खो दी गयीं. उन्होंने मई दिवस को पूंजीवाद का खात्मा करने तथा समाजवाद लाने के संघर्ष में वर्गीय शक्तियों की समीक्षा के दिवस के बजाय, एक आम छुट्टी में ही बदल डालने की कोशिश की.

इन सुधारवादी नेताओं ने, मई दिवस के पालन के साधन के रूप में हड़ताल का त्याग कर दिया और अक्सर, मई दिवस के पालन के लिए फैक्टरियों की छुट्टी को ही पसंद किया.

अपनी वर्ग समझौतावादी नीतियों पर चलने के अलावा उन्होंने, अपने अंतर्राष्ट्रवादी रुख का भी त्याग कर दिया और साम्राज्यवादी युद्ध के सवाल पर ढुलमुल तथा प्रतिक्रियावादी रुख अपनाना शुरू कर दिया. इसका नतीजा यह हुआ कि, जब पहला विश्व युद्ध छिड़ा तो इन नेताओं ने युद्ध का विरोध करने तथा मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता की रक्षा करने के बजाय, साम्राज्यवादी युद्ध चलाने में अपने-अपने देशों के सामराजी शासकों को ही समर्थन दिया. लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी तथा जर्मनी में रोजा लक्सेमबुर्ग के नेतृत्व में सामाजिक-जनवाद के क्रांतिकारी बाजू के रूप में, मजदूर आंदोलन का सिर्फ क्रांतिकारी पक्ष ही सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद पर कायम रहा और उसने युद्ध का विरोध किया. इस प्रकार, कम्युनिस्टों ने और क्रांतिकारी ट्रेड यूनियनों ने, जुझारू मई दिवस की परंपरा तथा उसके अंतर्राष्ट्रवादी चरित्र को बरकरार रखा. यही वजह थी कि रूस का मजदूर वर्ग सफल समाजवादी क्रांति कर सका और साझा आंदोलन को सबसे बड़ी जीत दिला सका.

सुधारवादी लाइन जारी रही

बहरहाल, सुधारवादियों की कार्यनीति पहले विश्व युद्ध के बाद भी नहीं बदली और वे पूंजीवादी सरकारों के साथ ज्यादा से ज्यादा गठजोड़ की राह पर चलते रहे. उन्होंने कुछ आर्थिक मांगों पर ही ध्यान केंद्रित किया और मई दिवस को फौरी मांगों को दुहराने का एक अवसर भर बनाकर रख दिया. इस तरह, जुझारू तथा वर्ग संघर्ष की परंपराओं को आगे बढ़ाने और सिर उठा रही फासी ताकतों के खिलाफ लड़ने की जिम्मेदारी कम्युनिस्टों तथा जुझारू ट्रेड यूनियनों के ही ऊपर आ गयी. जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी तथा मजदूर वर्ग के जुझारू हिस्से ने, फासीविरोधी संघर्ष में गौरव अर्जित किया, जबकि ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी ट्रेड यूनियनों के सुधारवादी नेता हिटलरी फासीवाद के खिलाफ साझा संघर्ष में शामिल नहीं हुए और उन्होंने सोवियत संघ के खिलाफ अपनी साम्राज्यवादी सरकारों की गंदी अंतर्राष्ट्रीय साजिशों में, अपने शासकों का ही साथ दिया. इसी दौर में अमरीका में मजदूर आंदोलन पर वर्ग सहयोगवादियों तथा प्रबंधकों के साथ मिलकर चलनेवाले गुंडों का दबदबा कायम हो गया. साल-दर-साल करके पहले के अंतर्राष्ट्रवादी दृष्टिकोण तथा जुझारूपन का गला घोंट दिया गया.

इसका परिणाम यह हुआ कि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान यूरोप तथा अमरीका का मजदूर आंदोलन लंबे अर्से तक अपनी समुचित भूमिका अदा नहीं कर सका और अक्सर उसने सोवियत संघ के खिलाफ साम्राज्यवादी साजिशों का ही साथ दिया. बहरहाल, इसी बीच मजदूर वर्ग की विचारधारा तथा समाजवादी क्रांति का झंडा एशिया तथा दूसरे महाद्वीपों के अनेक देशों में पहुंच चुका था. इन देशों में साम्राज्यवादविरोधी संघर्ष के दौरान मई दिवस की परंपराओं को जीवित रखा गया और इसके परिणामस्वरूप दुनिया की सबसे बड़ी क्रांतियों में एक—चीन की क्रांति—की विजय हुई और इसके बाद कोरिया तथा वियतनाम में क्रांतियां

अजेय शक्ति का उदय हो चुका है : यह शक्ति है सभी समाजवादी देशों के मजदूर वर्ग तथा उन देशों की समूची जनता की. इस शक्ति की कतारों में शामिल लोगों की संख्या दसियों करोड़ बैठती है. इससे पहले कभी मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता की हिफाजत करने के लिए और परस्पर संहारक युद्ध का विरोध करने के लिए, ऐसी जबर्दस्त शक्ति उपस्थित नहीं थी. इससे पहले कभी मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता को, शक्तिशाली समाजवादी राज्यों द्वारा समर्थित होने की, ऐसी सहूलियत प्राप्त नहीं थी.

इस जबर्दस्त ताकत को, पूंजीवादी देशों तथा तीसरी दुनिया के देशों के उन करोड़ों मजदूरों का समर्थन हासिल है, जो आज ट्रेड यूनियनों की विश्व फेडरेशन (वर्ल्ड फेडरेशन आफ ट्रेड यूनियन्स) के झंडे तले लामबंद हैं. ट्रेड यूनियनों की विश्व फेडरेशन, जिसके झंडे के नीचे समाजवादी देशों का मजदूर वर्ग भी लामबंद है, विश्व शांति तथा अंतर्राष्ट्रीय एकता की रक्षा के लिए सबसे अनवरत व सुसंगत रूप से संघर्ष करती रही है और विश्व शांति आंदोलन, बड़े ही शक्तिशाली ढंग से उसकी मदद कर रहा है.

ऐसी शक्तिशाली हैं वे शक्तियां, जो आज मजदूरों की अंतर्राष्ट्रीय एकता की रक्षा कर रही हैं. फिर भी, युद्ध का खतरा बना हुआ है और मई दिवस की शताब्दी, मजदूर वर्ग के सभी तबकों से मांग करती है कि युद्धोन्मादियों को शिकस्त देने के अपने प्रयास दुगने तेज करें.

भारत में मई दिवस

हमारे देश में मजदूर वर्ग का आंदोलन पिछले कोई पचास साल से या उससे भी ज्यादा से मई दिवस का पालन करता आ रहा है. वास्तव में आठ घंटे के दिन की मांग हमारे देश में हावड़ा के रेलवे मजदूरों ने १८६२ में ही उठा दी थी. बंगाल से, पहले इंटरनेशनल के साथ संपर्क कायम करने का भी एक प्रयास हुआ था और इसके लिए एक पत्र भेजा गया था, जिसका उल्लेख इंटरनेशनल वर्किंग मेंस एसोसिएशन की कार्रवई के ब्यौरों में दर्ज है. बहरहाल, शुरू से ही हमारे देश की ट्रेड यूनियनें एकजुट होकर मई दिवस का पालन अपना नहीं सकीं या स्वीकार नही कर सकीं. तीसरे तथा चौथे दशकों में कम्युनिस्टों के अलावा शायद ही दूसरा कोई इस दिवस का पालन करता रहा हो. बाद में चलकर गैर-कम्युनिस्टों में से जिन लोगों ने यह दिवस मनाने का फैसला किया, उन्होंने भी सुधारवादी दूसरे इंटरनेशनल तथा ग्रेट ब्रिटेन के सुधारवादी ट्रेड यूनियन आंदोलन के असर में ही यह फैसला लिया था. अनेक ट्रेड यूनियन नेता, मई दिवस को एक तरह की विदेशी चीज मानते थे और इसे मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता के साझा दिन के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं हुए. इसकी वजह यह थी कि एक वर्ग के रूप मे मजदूर वर्ग की हैसियत और अंतर्राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता का उन्हें कोई एहसास ही नहीं था. आज भी हमारे देश में कुछ ऐसे ट्रेड यूनियन संगठन हैं, जो मई दिवस को हमारे आंदोलन में किसी बाहरी घुसपैठ की तरह देखते हैं.

हमारे देश में ट्रेड यूनियन आंदोलन अगर मई दिवस की अंतर्राष्ट्रवादी भावना और पूंजीवादी व्यवस्था के खात्मे के उसके आह्वान के अर्थों में अगर साझा रूप से मई दिवस नहीं

हुईं तथा लाल सेनाओं की जीतों के प्रत्यक्ष असर में पूर्वी यूरोप में समाजवादी क्रांतियां हुईं.

इससे स्पष्ट हो जाता है कि जहां कहीं भी शुरू के सालों की वर्गीय परंपराओं तथा अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को बरकरार रखा गया, मजदूर वर्ग ने तेजी से प्रगति की. दूसरे देशों में सुधारवादी नेताओं ने उसके साथ धोखा किया. हे मार्केट की घटनाओं के बाद के ये सौ साल दिखाते हैं कि नरसंहारों, फांसियों तथा यातनाओं के बावजूद मजदूर वर्ग के आंदोलन को अभूतपूर्व जीतें हासिल हुई हैं और एक तिहाई दुनिया में पूंजीवाद का खात्मा हो चुका है. मई दिवस की शताब्दी के मौके पर मजदूर वर्ग को शुरू के शहीदों की महान कुर्बानियों को ही नहीं, मजदूर वर्ग के अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन की शानदार जीतों को भी याद रखना चाहिए. और, इससे अपने देश में समाजवाद की दिशा में आगे बढ़ने के हमारे प्रयासों में और तेजी आनी चाहिए.

नयी स्थिति, नये जवाब

बहरहाल, जिंदगी तथा उसकी सचाइयों से कौन बचा रह सकता है ! आज पश्चिमी देशों की सुधारवादी ट्रेड यूनियनों तक को नाभिकीय युद्ध के खतरे से दो-चार होना पड़ रहा है और उसके खिलाफ आवाज उठानी पड़ रही है. वे मई दिवस की सभाओं में अपनी यह विरोध की आवाज उठायें या न उठायें, युद्ध के खतरे की अनदेखी नहीं कर सकते हैं और अपने सालाना सम्मेलनों में इसके विरोध की आवाज उठाने पर मजबूर होते हैं. इनमें से अनेक संगठनों के नेता अपने देशों की साम्राज्यवादी सरकारों को दोषी बताने में हिचकते हैं और उन्हें सोवियत संघ के सिर पर दोष मढ़ने में भी कोई हिचक नहीं होगी. लेकिन, आम मजदूरों ने पहल अपने हाथ में ले ली है और अनेक देशों में, अपने नेताओं के विरोध के बावजूद, वे व्यापक शांति आंदोलन में शामिल हुए हैं, जिसमें कि दसियों लाख लोग शरीक हैं. ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस जैसे शक्तिशाली संगठन को युद्ध के पूर्ण विरोध का रुख अपनाना पड़ा है और ब्रिटिश लेबर पार्टी ने अपने एक सम्मेलन में एकतरफा नाभिकीय निरस्त्रीकरण के पक्ष में फैसला लिया है. नाभिकीय युद्ध के खतरे के चलते अंतर्राष्ट्रीय एकता तथा अंतर्राष्ट्रवाद की पुरानी भावना एक बार फिर सामने आ रही है और अंतर्राष्ट्रीय टकराव का विरोध करने की मई दिवस की पुरानी परंपरा को पुनर्जीवित किया जा रहा है. बहरहाल, यह सही है कि इन देशों की दो सोशलिस्ट पार्टियां, जिनका इन देशों में मजदूर वर्ग पर बड़ा भारी असर है, आज भी सुधारवाद तथा सोवियत-विरोध का अपना खेल जारी रखे हुए हैं और अपने व्यवहार तथा आचरण से, युद्ध के सवाल पर भी, मजदूर वर्ग की कतारों को विभाजित करने की हर संभव कोशिश कर रही हैं.

शांति की पक्षधर जबर्दस्त शक्ति

फिर भी, मई दिवस की अंतर्राष्ट्रीय परंपराओं की रक्षा करते हुए एक शक्तिशाली तथा

मना सका, तो उसके कारण वही थे जो पश्चिमी देशों के आंदोलन के मामले में थे. ट्रेड यूनियन आंदोलन का एक हिस्सा ऐसा था, जो ट्रेड यूनियन आंदोलन के अंदर समाजवाद के किसी तरह के जिक्र के ही खिलाफ नहीं था बल्कि किसी भी किस्म की राजनीति की चर्चा नहीं चाहता था. ये नेता निश्चित रूप से हड़तालविरोधी थे और सरकार, ब्रिटिश जनमत को यह दिखाने के लिए उनके समर्थन का इस्तेमाल करती थी कि भारतीय मजदूर, राष्ट्रीय स्वाधीनता की मांगों के खिलाफ, ब्रिटिश शासकों के साथ हैं. ब्रिटिश शासकों के साथ वर्ग समझौते की उनकी नीति पराजित हो गयीं तो १९२९ में उन्होंने ए आइ टी यू सी (एटक) में विभाजन करा दिया. वे साम्राज्यवादविरोधी राजनीतिक संघर्ष को ठुकराने के आधार पर, ट्रेड यूनियनों द्वारा हर तरह की राजनीति को ठुकराये जाने के आधार पर और हड़तालों से बचने की नीति के आधार पर, एकता चाहते थे.

इसलिए, यह समझना मुश्किल नहीं है कि इन हिस्सों के साथ मई दिवस का साझा पालन संभव नहीं था.

पूंजीवादी राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रवाद

आंदोलन के राष्ट्रवादी हिस्सों के मामले में भी स्थिति बहुत आसान नहीं थी. ट्रेड यूनियन आंदोलन में राष्ट्रवादियों का एक हिस्सा मजदूर वर्ग की किसी स्वतंत्र राजनीति के प्रवेश के खिलाफ था और वास्तव में तो ट्रेड यूनियन आंदोलन में कोई राजनीति लाये जाने के ही खिलाफ था. उसका कट्टर पूंजीवादी राष्ट्रवादी दृष्टिकोण भी उसे, अंतर्राष्ट्रवाद या समाजवाद की नजर से सोचने से रोकता था. वास्तव में यह तबका अंतर्राष्ट्रवाद को, राष्ट्रवाद तथा देशभक्ति के प्रतिमुख भी खड़ा करता था और कम्युनिस्टों पर विदेशी विचारधारा पर निर्भर होने का आरोप लगाता था. बहरहाल, मूलगामी राष्ट्रवादी पक्ष जरूर स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता की समस्याओं को मजदूर वर्ग के सामने रखने और साम्राज्यवादविरोधी कार्रवाई का आह्वान करने के लिए तैयार था. लेकिन, वह भी अंतर्राष्ट्रवाद के खिलाफ था. इन मूलगामी राष्ट्रवादियों में से अनेक ने जल्दी ही, सोवियतविरोधी रुख अपना लिया.

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि इस दौर में इनमें से किसी भी हिस्से के साथ मिलकर इस दिवस का ऐसा पालन संभव नहीं था, जो मई दिवस के बुनियादी आह्वान पर आधारित होता. इसलिए, कम्युनिस्टों को अक्सर अकेले ही मई दिवस का पालन करना पड़ा. एकता के हित में कभी-कभी वे मूलगामी राष्ट्रवादियों, कांग्रेस सोशलिस्टों के साथ मिलकर मई दिवस का पालन करते भी थे और स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता के लिए लड़ने के लिए मजदूरों का आह्वान करते थे. लेकिन, ऐसे आयोजनों में अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता तथा एकता का आह्वान बहुत ही कमजोर रहता था.

कम्युनिस्ट क्रांतिकारी परंपरा पर कायम रहे

फिर भी, कम्युनिस्ट तथा उनके असर में चलनेवाले ट्रेड यूनियन संगठन, अपने

अनुयायियों के बीच अंतर्राष्ट्रवाद तथा मई दिवस की सच्ची भावना को ले जाने में सफल हुए. कम्युनिस्ट ही थे, जिन्होंने दूसरा विश्व युद्ध शुरू होने के बाद देश में पहला युद्धविरोधी प्रदर्शन आयोजित किया. युद्ध की घोषणा होने के कुछ ही दिन बाद २ अक्टूबर १९३९ को बंबई में एक युद्धविरोधी हड़ताल हुई, जिसमें ९० हजार से ज्यादा मजदूरों ने हिस्सा लिया. यह, विश्व मजदूर आंदोलन में, दूसरे विश्व युद्ध के विरोध में हुई पहली हड़ताल थी. मजदूरों की जनसभा में सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये प्रस्ताव में घोषणा की गयी थी; ''यह सभा, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग तथा दुनिया की जनता के साथ कजुटता का इजहार करती है, जिन्हें साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा सबसे विनाशकारी युद्ध में घसीटा जा रहा है. यह सभा, मौजूदा युद्ध को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन की एकजुटता के लिए चुनौती मानती है और घोषणा करती है कि यह काम मजदूरों तथा विभिन्न देशों के जनगणों का है कि मानवता के खिलाफ साम्राज्यवाद की इस साजिश को शिकस्त दें.''

जनता पर थोपे गये युद्ध के बोझों का प्रतिरोध शुरू करने में भी कम्युनिस्ट ही सबसे आगे थे. उन्होंने अपना यह प्रतिरोध महंगाई भत्ते की मांग पर मार्च १९४० में बंबई में हुई १ लाख ७५ हजार कपड़ा मजदूरों की हड़ताल से शुरू किया. बंबई की हड़ताल ने देश भर में हड़तालों की एक लहर पैदा कर दी.

अवसरवादी रुझान

आजादी के बाद राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा नियंत्रित ट्रेड यूनियन पक्ष, एटक से अलग हो गया और उसने स्पष्ट कर दिया कि वह ट्रेड यूनियन आंदोलन में कम्युनिस्टों के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहता. यह, मजदूर वर्ग को पूंजीपति वर्ग के प्रभाव में लाने, अंतर्राष्ट्रवाद को ठुकराने और मजदूर वर्ग के अंदर वर्ग सहयोगवादी राजनीति विकसित करने की खुली कोशिश थी. इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए आइ एन टी यू सी (इंटक) की स्थापना की गयी. कहना न होगा कि इंटक के साथ, जो क्रांतिकारी राजनीति तथा मजदूरवर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता को ठुकराती है, मई दिवस का साझा पालन मुश्किल था.

बहरहाल, जो एटक के साथ रह गये, उनके साथ भी स्थिति बहुत अच्छी नहीं बनी रह सकी. सुधारवाद, पूंजीवादी-भूस्वामी सरकार के साथ गठजोड़ करने के विषाणुओं ने जल्द ही एटक के एक हिस्से को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया. तत्कालीन सी पी आइ नेतृत्व का एक हिस्सा भी संशोधनवाद का शिकार हो गया, जिसके चलते अंतत : दोनों संगठनों का विभाजन हो गया. आखिर में, इस सबकी परिणति प्रतिक्रियावादी एमर्जेंसी निजाम को सी पी आइ तथा एटक, दोनों द्वारा समर्थन दिये जाने में हुई. स्वत: स्पष्ट है कि उन वर्षों में मई दिवस का ऐसा साझा पालन संभव नहीं था, जोकि शुरू के मई दिवसों की क्रांतिकारी सारवस्तु की अभिव्यक्ति कर सके.

ट्रेड यूनियन एकता के लिए संघर्ष

आपस में जुड़ाव तथा साझा क्रांतिकारी विचारधारा का यह अभाव आज भी हमारे ट्रेड यूनियन आंदोलन के पीछे पड़ा हुआ है. निस्संदेह, यह जरूरी है कि ट्रेड यूनियन आंदोलन ज्यादा से ज्यादा एकजुट होता जाय, क्योंकि इसके बिना शासकों को, एक वर्ग के रूप में मजदूर वर्ग की पूरी शक्ति का एहसास नहीं हो सकता. फिर भी, राष्ट्रीय अभियान समिति के जरिये ट्रेड यूनियनों की जो मौजूदा एकता कायम हुई है, वह कुछ फौरी आर्थिक मांगों को उठाने तथा उन पर कार्रवाई करने से आगे नहीं जाती है.

अब तक यह समन्वय समिति, युद्ध का विरोध करते हुए तथा आक्रामक अमरीकी साम्राज्यवाद को बेनकाब करते हुए, कोई साझा प्रस्ताव तक स्वीकार नहीं कर सकी है. वह मजदूरों को नाभिकीय युद्ध के खतरे तथा उसकी विभीषिकाओं के बारे में बताने में असमर्थ रही है और यह बताने में भी असमर्थ है कि युद्ध का यह सवाल विश्व प्रभुत्व की अमरीकी साजिश का हिस्सा है जिसमें भारत को गुलाम बनाना भी शामिल है. राष्ट्रीय अभियान समिति के बारे में न तो यह कहा जा सकता है कि उसके पास कोई साझा अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण है और न देश के सामने मौजूद जनतंत्र तथा एकता की समस्याओं पर ही इसका कोई साझा रुख है. यही वजह थी कि इन तमाम सालों में, एकजुट ढंग से, देश के सभी हिस्सों में मई दिवस का ऐसा समुचित पालन नहीं हो सका है, जो शुरू के मई दिवसों की अंतर्राष्ट्रवाद तथा क्रांति की भावनाओं को प्रतिबिंबित कर पाता.

बहरहाल, स्थितियां बदली हैं और बदल रही हैं. नाभिकीय युद्ध की चुनौती अब हमारी जनता के बड़े हिस्सों को हरकत में ला रही है और इनमें वे ट्रेड यूनियनें भी शामिल हैं, जो अब तक इसके प्रति घोर उदासीनता ही दिखाती रही थीं. अंदरूनी फूटपरस्त ताकतों की चुनौती भी तेज हो रही है और अनेक ट्रेड यूनियनों को इसका मुकाबला करने की जरूरत का एहसास हो रहा है. फिर भी, अनेक ट्रेड यूनियन संगठन आज भी हमारे देश के खिलाफ सामराजी साजिशों और नाभिकीय युद्ध का खतरा पैदा करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद के जिम्मेदार होने के प्रति, पूरी तरह से बेखबर बने हुए हैं.

युद्ध के प्रश्न पर साझा समझ बनाने, फूटपरस्त ताकतों के खिलाफ लड़ने तथा रंगभेदवाद के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए अनेक ट्रेड यूनियनों की बैठक बुलाने की इंटक नेतृत्व की अभी हाल की पहल, मजदूर वर्ग तथा ट्रेड यूनियन आंदोलन के सामने मौजूद व्यापकतम् समस्याओं के प्रति बढ़ती जागरूकता का ही संकेत देती है. यह एक स्वागत योग्य कदम है और, इन समस्याओं के प्रति साझा जागरूकता बनाने और मजदूरों के बीच इसके अत्यावश्यक होने की भावना पैदा करने के लिए, हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए

युद्ध के खतरे के प्रति बढ़ती जागरूकता का स्वागत करने के साथ ही सीटू तथा उससे संबद्ध यूनियनों को, मई दिवस की शताब्दी को, हमारे घोषणापत्र की रौशनी में, शुरू के मई दिवसों की भावना को पूरी तरह से पुनर्जीवित करने के अवसर के रूप में देखना चाहिए. अगर मई

दिवस की शताब्दी को, सारी क्रांतिकारी अंतर्वस्तु से वंचित कर, सिर्फ कुछ आर्थिक मांगों की घोषणा के रूप में विकृत होने दिया जाता है, तो इससे मजदूर वर्ग के आंदोलन की जुझारू दिशा को भारी क्षति पहुंचेगी.

शताब्दी के नारे ऐसे होने चाहिए, जो मई दिवस की क्रांतिकारी परंपरा के तीनों पहलुओं को समेट सकें. इसमें **पहला** है, ऐसी आंशिक मांगें, जिनमें क्रांतिकारी महत्व अंतर्निहित हो और जो मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष की चेतना पैदा करने में समर्थ हों. **दूसरा** पक्ष है, भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के सामने उपस्थित फौरी कामों का. **तीसरा पक्ष होगा**, युद्ध के खिलाफ संघर्ष तथा मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता की रक्षा करना.

मई दिवस शताब्दी घोषणापत्र में ये सभी पहलू शामिल हैं. इसमें कहा गया है कि मई दिवस के मौके पर मजदूर वर्ग को सरकार की आर्थिक नीति के खिलाफ विरोध की अपनी आवाज उठानी चाहिए और बहुराष्ट्रीय निगमों को हमारी अर्थव्यवस्था में घुसपैठ की जो छूट दी गयी है, उस पर विरोध प्रकट करना चाहिए.

घोषणापत्र में, ट्रेड यूनियन अधिकारों पर हमले बंद किये जाने की मांग की गयी है और कंप्यूटराइजेशन की सरकारी नीति की भर्त्सना की गयी है. सारी बंद पड़ी फैक्टरियों तथा मिलों को फौरन खोले जाने की मांग के साथ ही मजदूर वर्ग को तत्काल तथा समुचित रूप से बेकारी राहत दिये जाने की मांग करनी चाहिए और यह मांग भी करनी चाहिए कि रोजगार के अधिकार को, संविधान में दिये गये मौलिक अधिकारों में शामिल किया जाय. सूती कपड़ा, जूट तथा चीनी उद्योगों के तत्काल तथा पूर्ण राष्ट्रीयकरण की मांग भी उठायी जानी चाहिए.

मजदूर वर्ग को, आम जनता तथा किसानों व खेतमजदूरों के हितों की अलमबरदारी के लिए अपनी तैयारी तथा अपने दृढ़ निश्चय का ऐलान करना चाहिए. उसे कृषि संबंधों में आमूल-चूल परिवर्तन, भूमि के केंद्रीकरण को समाप्त करने और जोतनेवालों में जमीन के वितरण की मांग करनी चाहिए.

मई दिवस के मौके पर मजदूर वर्ग को तानाशाही की ताकतों के खिलाफ लड़ने, जनता के जनवादी अधिकारों की रक्षा तथा विस्तार के लिए लड़ने और जनता के जनवादी राज्य की स्थापना के लिए—जो समाजवाद का रास्ता तैयार करेगा—काम करने के अपने दृढ़ निश्चय की घोषणा करनी चाहिए.

मजदूर वर्ग को, हमारे देश की एकता को कमजोर करने की कोशिश कर रहीं साम्राज्यवादी साजिशों के खिलाफ, विघटन की ताकतों को उभाड़ रहीं पृथकतावादी तथा फूटपरस्त ताकतों के खिलाफ और मेहनतकशों की एकता को तोड़नेवाले सांप्रदायिक तथा दकियानूसियत के औजारों के खिलाफ लड़ने के अपने निश्चय का ऐलान करना चाहिए.

गुटनिरपेक्षता की हमारी विदेश नीति पर लगातार डाले जाते दबाव तथा इस मामले में

सामने आयी हिचकिचाहटों तथा रुझानों को देखते हुए, मजदूर वर्ग को हमारी विदेश नीति के अमल पर सतर्क निगरानी रखनी चाहिए और वक्त रहते हस्तक्षेप करके यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई राष्ट्रविरोधी समझौता न होने पावे. गुटनिरपेक्षता की नीति, जो युद्ध का विरोध करती है तथा शांति का पक्ष लेती है और जो तीसरी दुनिया के अनेक देशों को साम्राज्यवादी प्रभुत्व के दायरे के बाहर रखने में मदद देती है, युद्ध के खतरे का मुकाबला करने में और अपनी अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारी पूरी करने में भी, मजदूर वर्ग के लिए बहुत ही सहायक है. समाजवादी देशों के साथ मैत्री कायम करनेवाली गुटनिरपेक्षता की नीति, भारतीय जनता तथा मजदूर वर्ग को इसके लिए अवसर देती है कि युद्धोन्मादियों के खिलाफ तथा शांति के पक्ष में, अपनी ताकत लगा सकें.

मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता और तमाम सैन्यवादियों तथा सामराजी व हमलावर युद्धों का विरोध, मई दिवस के संघर्ष की क्रांतिकारी विरासत के अविभाज्य अंग हैं. मई दिवस शताब्दी के घोषणापत्र में सही कहा गया है; ''आज समूची दुनिया के सामने एक बार फिर नाभिकीय युद्ध का खतरा है. यह किन्हीं दो महाशक्तियों के बीच की लड़ाई नहीं है बल्कि, विश्व मजदूर वर्ग के सौ साल के संघर्ष की उपलब्धि, समाजवादी शिविर, के खिलाफ साम्राज्यवादी शिविर द्वारा आयोजित किया जा रहा युद्ध है.''

और साम्राज्यवादी, समाजवादी शिविर के खिलाफ युद्ध क्यों छेड़ना चाहते हैं? क्योंकि समाजवादी देशों में न तो बेकारी है, न गरीबी, न आर्थिक संकट और न पूंजीवादी शोषण. समाजवाद की व्यावहारिक उपलब्धियां किसी चुंबक की तरह लाखों-करोड़ों लोगों को अपनी ओर खींच रही हैं. साम्राज्यवादी, प्रगति के इस चक्के को रोकना चाहते हैं और अपने शोषण के लिए सारी दुनिया को फिर से जीतना चाहते हैं.

अमरीकी साम्राज्यवादी सिर्फ समाजवादी व्यवस्था को ही नष्ट नहीं करना चाहते हैं बल्कि साम्राज्यवादी शोषण के लिए सारी दुनिया को दोबारा जीतने की कोशिश भी कर रहे हैं. नाभिकीय युद्ध की साजिश, विश्व प्रभुत्व कायम करने की, भारत जैसे तीसरी दुनिया के देशों को गुलाम बनाने की साजिश भी है.

यही वजह है कि अमरीकी साम्राज्यवादी तथा उनके रीगन जैसे प्रतिनिधि, नाभिकीय हथियारों पर कोई सीमाबंदी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं, सैनिक खर्चों की कोई हदबंदी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं और, सुदूर अंतरिक्ष को नाभिकीय हथियारों से मुक्त रखने की बात स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं. सोवियत संघ ने नाभिकीय हथियारों के परिसीमन के अनेक प्रस्ताव रखे हैं, लेकिन अमरीकी सरकार ने उनका कोई जवाब नहीं दिया है और नाभिकीय हथियारों के इस्तेमाल में पहल न करने का वचन तक देने से इनकार कर दिया है. वास्तव में अंतरिक्ष युद्ध कार्यक्रम के पीछे मंशा ठीक प्रथम प्रहार की ही है.

इन परिस्थितियों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड गोर्बाचेव ने इस सदी के अंत तक नाभिकीय हथियारों का खात्मा करने और इस लक्ष्य की दिशा में प्रारंभिक कदम उठाने के जो ताजा प्रस्ताव किये हैं, वे शांति के हितों की सेवा करते हैं और सबसे विनाशकारी युद्ध से मानव जाति की रक्षा करने के लिए एक रास्ता दिखाते हैं. सीटू तथा भारत के समूचे मजदूर वर्ग को इन प्रस्तावों को अपना समर्थन देना चाहिए. उनका स्वीकार किया जाना मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकता की रक्षा करेगा और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के झंडे को बुलंद रखेगा.

कामरेड मिखाइल गोर्बाचेव के वक्तव्य पर सोवियत संघ की आल यूनियन सेंट्रल काउंसिल आफ ट्रेड यूनियंस (ए यू सी सी टी यू) ने दुनिया भर के मेहनतकशों तथा ट्रेड यूनियनों से जो अपील की है, नाभिकीय युद्ध के खतरे के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय एकता तथा कार्रवाई का अत्यावश्यक आह्वान है.

यह अपील एक ऐसे मजदूर वर्ग की है, जिसे फासीवाद के खिलाफ तथा सभी जनगणों की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते हुए, २ करोड़ बेहतरीन बेटे-बेटियों की आहुति देनी पड़ी थी—मई दिवस पर इस अपील को समुचित तथा कारगर समर्थन मिलना ही चाहिए. यह अपील विश्व मजदूर वर्ग के एक दस्ते के रूप में भारत के मजदूर वर्ग को याद दिलाती है कि उसे युद्ध के बढ़ते खतरे के खिलाफ एक दृढ़ तथा सक्रिय रुख अपनाना है.

अपील में कहा गया है; "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव एम एस गोर्बाचोव ने एक वक्तव्य दिया है, जिसमें २००० ईस्वी तक नाभिकीय हथियारों के पूर्ण तथा विश्वव्यापी खात्मे का एक कार्यक्रम और शांति के लिए दूसरी मुख्य कार्रवाइयों की पेशकश की गयी है.... मानव जाति के सामने एक स्पष्ट, सुसंगत तथा हर लिहाज से सुविचारित, ठोस कार्रवाई का कार्यक्रम प्रस्तुत है, जिसे पूरा करके हम शांति तथा निरस्त्रीकरण के साथ बीसवीं सदी पार कर सकते हैं."

अपील में कहा गया है; "१३ करोड़ ७० लाख सोवियत ट्रेड यूनियनों के सदस्यों की ओर से ए यू सी सी टी यू सभी देशों के मेहनतकशों तथा ट्रेड यूनियन संगठनों का आह्वान करती है कि इस सदी के पूरे होने से पहले-पहले दुनिया भर में नाभिकीय हथियारों के पूरी तरह खात्मे के सोवियत संघ के विशद कार्यक्रम को अपना चौतरफा समर्थन दें."

इस अपील में, "दुनिया भर के मेहनतकशों तथा ट्रेड यूनियनों" का आह्वान किया गया है कि "दूसरी शक्तियों, खासकर अमरीका पर इस तरह के नाभिकीय विस्फोटों पर सोवियत संघ द्वारा लगायी गयी लंबी, एकतरफा रोक का अनुसरण करने के लिए दबाव डालें; अंतरिक्ष प्रहार प्रणालियों समेत नयी-नयी तरह के नरसंहार के हथियारों के विकास तथा उत्पादन को पूरी तरह प्रतिबंधित कराने के लिए संघर्ष करें; रसायन हथियारों को पूरी तरह से नष्ट किये जाने की मांग करें; यह सुनिश्चित करने में हर तरह से मदद करें कि जेनेवा में हुए सोवियत-

अमरीकी शिखर सम्मेलन से शुरू हुई प्रक्रिया के फलस्वरूप उस बैठक में हुए सिद्धांतनिष्ठ समझौते पूरे हों और हथियारों की दौड़ रोकने तथा परस्पर विश्वास को बढ़ाने के लिए ठोस समझौते हों.''

अपील में आगे कहा गया है; ''सुसंगठित प्रयासों के जरिये ही स्थायी शांति के भव्य भवन को खड़ा किया जा सकता है. आगे का घटनाविकास बहुत हद तक इस पर निर्भर करेगा कि युद्ध के खतरे का मुकाबला करने में संघर्ष का मोर्चा कितना ज्यादा एकजुट है. इसमें कोई भी विलंब असहनीय है. नरसंहार के हथियारों से मुक्त होकर तीसरी सहस्त्राब्दी में प्रवेश करने के लिए जरूरी है कि आज कार्रवाई की जाय.

यह, नाभिकीय युद्ध के खतरे के खिलाफ लड़ने, सामराजी मनसूबों को विफल करने और अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग को शांति की रक्षा के लिए एक एकजुट सेना के रूप में एकबद्ध करने का, एक ठोस कार्यक्रम है. हमारे देश में मई दिवस शताब्दी को इस अपील का पूरा-पूरा स्वागत करना चाहिए. शांति के लिए सोवियत संघ के प्रस्तावों का प्रचार करना चाहिए और अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्व पूरे करने के लिए देश के समूचे मजदूर वर्ग को लामबंद करना चाहिए. यह दुनिया भर के मजदूर वर्ग के सामने मौजूद एक सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है और मई दिवस शताब्दी के मौके पर भारत के मजदूर वर्ग को विश्व शांति के लिए संघर्ष में किसी से पीछे नहीं रहना चाहिए.

□

Other CITU Publications

Trade Unions & Public Sector	—	Price Rs 10/-
Sinister Conspiracy against Public Sector	—	Price Rs 7/-
Government Responsible for Collapse of Safety Legislations	—	Price Rs 1.50
History of Railway Trade Union Movement	—	Price Rs 6/-

मूल्य: एक रुपया

अप्रैल १९८६

एम के पंधे द्वारा सेंटर आफ इंडियन ट्रेड यूनियंस के लिए ६ टालकटोरा रोड, नई दिल्ली-110001 (फोन : 384071) से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, सी-५२-५३ डी डी ए शेड्स, ओखला फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित